अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
म्हारो लक्ष्य-राष्ट्र री प्रगति
स्थापित 1935

समाज विकास

एक समाज - एक आवाज

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• मार्च २०२५ • वर्ष ७६ • अंक ०३
मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

१० मार्च २०२५; अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का संस्कार-संस्कृति-चेतना कार्यक्रम श्री शिक्षायतन स्कूल, कोलकाता में आयोजित हुआ। चित्र में परिलक्षित हैं राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया, राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री पवन जालान, श्री शिक्षायतन फाउंडेशन के प्रधान सचिव विनोद अग्रवाल, प्रधानाचार्य संगीता टंडन, शिक्षिकाएँ बिनीता चौधरी, आरती गुप्ता, अनुपमा सिंह सहित अन्य शिक्षकगण एवं श्री शिक्षायतन स्कूल की प्रतिभागी छात्राएँ।

बधाई !

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नव निर्वाचित अध्यक्ष

श्री राजेश कुमार सिंघल

इस अंक में

संपादकीय
- रंज उनको बहुत है मगर आराम के साथ

आपणी बात
- अनवरत प्रयासों के सामने बाधाओं को झुकना पड़ता है।

रपट
- संगोष्ठी
- राजस्थानी साहित्य सम्मान समारोह
- श्री शिक्षायतन स्कूल में संस्कार-संस्कृति-चेतना कार्यक्रम

प्रांतीय समाचार
- पूर्वोत्तर, झारखंड, उत्कल, कर्नाटक, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली

विशेष पेज-१७

संस्कार-संस्कृति चेतना
- होलिका दहन का महत्व और कारण
- होली री धमाल
- पूजा से जुड़ी हुई अति महत्वपूर्ण बातें
- संतान को संस्कार कैसे सिखाया जाय

होली री घणी घणी बधाई!

CENTURYPLY®

CENTURYPLY®
CENTURYLAMINATES®
CENTURYVENEERS®
CENTURYDOORS®
CENTURYEXTERIA®
Decorative Exterior Laminates
CENTURYPVC®
CENTURYPARTICLEBOARD®
The Eco-friendly and Economical Board
CENTURYPROWUD®
*MDF-The **wood** of the future*
zykron
FIBRE CEMENT BOARDS & PLANKS
SAINIK 710
WATERPROOF PLY
SAINIK LAMINATES™
BOLD & BEAUTIFUL

CENTURY PLYBOARDS (INDIA) LTD.

Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata - 700 088

For any queries, SMS 'CPIL' to 56070 or call us on **1800 5722 122**

समाज विकास

◆ मार्च २०२५ ◆ वर्ष ७६ ◆ अंक ३
◆ एक प्रति - ₹१० ◆ वार्षिक - ₹१००

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
● **चिट्ठी आई है एवं सम्मेलन केंद्रीय कार्यालय में पुस्तकालय का उद्घाटन**	३
● **संपादकीय :** रंज उनको बहुत है मगर आराम के साथ	४
● **आपणी बात : शिव कुमार लोहिया** अनवरत प्रयासों के सामने बाधाओं को झुकना पड़ता हैं।	५
● **रपट**	
संगोष्ठी - मारवाड़ी कहावतों का संसार	६
राजस्थान की नारियाँ	७
सम्मेलन समाचार	
राजस्थानी साहित्य सम्मान समारोह	८-९
श्री शिक्षायतन स्कूल में	१०-१३
संस्कार-संस्कृति-चेतना कार्यक्रम	
विशेष **संस्कार-संस्कृति चेतना**	
'होलिका दहन का महत्व और कारण'	१७-२०
होली री धमाळ	
पूजा से जुड़ी हुई अति महत्वपूर्ण बातें	
संतान को संस्कार कैसे सिखाया जाय	
● **प्रांतीय समाचार**	
पूर्वोत्तर, झारखंड, उत्कल, कर्नाटक, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली	२१-२५,३०-३२
सम्मेलन मंच	३३-३४
होली में उपाधियों का मुक्तहस्त वितरण	१४-१५

स्वत्वाधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
All India Marwari Federation

प्रशासनिक एवं संपर्क कार्यालय : ४बी, डकबैक हाउस, ४१, शेक्सपीयर सरणी, कोलकाता - ७०००१७
फोन : ०३३-४००४ ४०८९

◆ email: aimf1935@gmail.com
◆ Website : www.marwarisammelan.com

स्वत्वाधिकारी ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन के लिए **भानीराम सुरेका** द्वारा ऑल इंडिया मारवाड़ी फेडरेशन, ४बी, डकबैक हाउस (४ तल्ला), कोलकाता-१७ से प्रकाशित तथा सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित।

◆ प्रेरक संपादक : सीताराम शर्मा ◆ संपादक : शिव कुमार लोहिया

प्रकाशित रचनाओं से संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है

'समाज विकास' का फरवरी अंक मिला। देखा - पढ़ा। प्रस्तुत अंक सारगर्भित रचनाओं से परिपूर्ण और उत्कृष्ट हैं। संपादकीय अंतर्गत 'गृहस्थ ऋषि' प्रणादायक है। आपने ठीक ही लिखा है कि - जहां बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, वहां समाज नहीं बन सकता। आपणी मायड़ भाषा आलेख भी आकृष्ट करता हैं। असम साहित्य सभा और मारवाड़ी (गोपाल जालान) में साहित्य से जुड़े मारवाड़ी समाज के बारे में पूरी जानकारी मिलती है। डॉक्टर पवन पोद्दार जी का आलेख 'छोटे शहरों - गांवों में समाज के कुंवारे युवाओं की बढ़ती फौज' एक गंभीर समस्या है। समाज के लोगों को इस पर ध्यान देना होगा। मारवाड़ी समाज के विविध आयोजनों के संदर्भ में भरपूर समाचार से समाज की जीवंतता के बारे में पता चलता हैं। अंक निश्चित रूप से पठनीय और संग्रहणीय हैं। पत्रिका परिवार को बधाई।

– नरेन्द्र कुमार सिंह
संपादक: समय सुरभि अनंत बेगूसराय, बिहार

सम्मेलन केंद्रीय कार्यालय में पुस्तकालय का उद्घाटन

गत ९ मार्च २०२५ को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक समारोह के मध्य सम्मेलन कार्यालय में स्थित पुस्तकों को समाहित कर पुस्तकालय की शुरुआत की गई। उद्घाटन समारोह में राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया, राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी, प्रवीण राजस्थानी साहित्यकार बंशीधर शर्मा, राजस्थान सूचना केंद्र के सहायक निदेशक श्री हिंगलाज दान रतनु एवं राष्ट्रीय पदाधिकारी एवं सदस्य भी उपस्थित थे। पाठकों के लिए पुस्तकालय सोमवार से शुक्रवार तक अपराह्न ३ से ५ बजे तक खुला रहेगा।

रंज उनको बहुत है मगर आराम के साथ

एक गणना के अनुसार भारत की आबादी में ६६ प्रतिशत से ज्यादा लोग ३५ साल से कम उम्र के हैं। भारत की आबादी का करीब ४० प्रतिशत लोग १३ से ३५ साल की उम्र के बीच हैं। समझा जाता है कि विश्व की युवा जनसंख्या का पांचवा हिस्सा भारत में रहता हैं। युवा को किसी भी देश की मूल्यवान संपति भी माना जाता हैं। स्वामी विवेकानंद को युवाओं की शक्ति का पूरा अहसास था। अगर युवा सही मायने में उनके विचार आत्मसात कर ले तो वैश्विक समाज में क्रांति आ जाएगी। उन्होंने कहा था तुम मुझे १०० युवा दो, मैं पूरे विश्व को बदल दूंगा। उन्होंने युवाओं को कहा था – **उठो, जागो, और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाय**। उन्होंने कहा कि युवा में वायु जितनी ताकत होती है, क्योंकि युवा को उलट कर पढ़े तो वह वायु बन जाता हैं। युवा जोश और ताकत से पूरी तरह ओत-प्रोत होता हैं। शरीर की बनावट उर्जा एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से मानव जीवन में युवा की स्थिति सर्वोत्तम हैं। इसीलिये युवा वर्ग को देश में रीढ़ की हड्डी भी कहा जाता हैं।

इसी सिलसिले में हाल ही में इंफोसिस के श्री नारायण मूर्ति एवं लार्सन टुब्रो के एस.एन. सुब्रमनियम ने २०४७ तक सरकार के विकसित भारत के लक्ष्य के मद्देनजर उनका सुझाव लाजमी लगता है जिसमें उन्होंने सप्ताह में ६०-९० घंटा काम करने को कहा था। इन सुझावों की काफी आलोचना हो रही हैं। हाल ही में चेजिंग ग्रोथ २०२५ निवेशक सम्मेलन में उदय कोरुक ने युवा पीढ़ी की सोच में बदलाव की ओर इशारा किया हैं। उन्होंने कहा "मुझे चिंता इस बात की है कि इस पीढ़ी के कई लोग खासकर कोविड के बाद, आसान रास्ता चुन रहे हैं। वे फैमिली आफिस और निवेश का प्रबंधन कर रहे हैं। शेयर बाजार में कारोबार कर रहे है, म्यूचल फंड में पैसा लगा रहे हैं और इसे ही अपना पूरा काम मान रहे हैं।" कोटक ने जोर देकर कहा कि इन लोगों को सिर्फ निवेश पर ध्यान देने के बजाय व्यापार में लगना चाहिए। उन्होंने सवाल उठाया कि ३५ से ४० वर्ष की उम्र के लोग अर्थ व्यवस्था में सीधे तौर पर योगदान क्यों नहीं दे रहें?" मैं इस पीढ़ी में सफलता के लिये भूख देखना चाहता हूँ और नये बिजनेस बनाते हुए देखना चाहता हूँ। आज भी मेरा मानना है कि अगली पीढ़ी को कड़ी मेहनत करनी चाहिए और व्यापार खड़ा करना चाहिए। बजाय इसके कि वे जीवन में इतनी जल्दी वित्तीय निवेशक बन जाय।

कोटक की बातों की पुष्टि आकड़ों से हो रही हैं। एक आकड़े के अनुसार सन् २०१८ से शेयर बाजार में निवेशको में ३० वर्ष से कम के निवेशक की संख्या लगभग २२ प्रतिशत की, २०२४ में बढ़कर ४० प्रतिशत हो गई हैं। सेबी द्वारा किये गये एक सर्वे के अनुसार खुदरा निवेशकों ने पिछले तीन वर्षो के ऑक्शन सौदे में अपनी बचत दांव पर लगा दी और लगभग १.८ लाख करोड़ रुपये खो दिये।

इन सब बातों से हम समझ सकते है कि आज बिना कुछ अधिक प्रयास किये, धन कमाने की होड़ में युवा न सिर्फ अवसर खो रहे है बल्कि धन भी गंवा रहे हैं।

युवाओं के इस प्रकार के आचरण पर प्रवीण उद्योगपति हर्ष गोयनका ने भी सवाल उठाते हुए कहा है – "व्यवसाय और उद्योग के क्षेत्र में अपनी आस्तीन चढ़ाकर पसीना बहाने के बजाय वे व्यापार, सट्टेबाजी और पारिवारिक कार्यालय चलाने में व्यस्त हैं। उनके अनुसार पिछली पीढ़ियों में एक व्यवसायी परिवार में जन्म लेने का मतलब था धन से पहले जिम्मेदारी विरासत में मिला। उत्तराधिकारीयों से अपेक्षा की जाती कि वे अपनी युवावस्था कारखाने के फर्श और बोर्डरूम में बिताकर आपूर्ति श्रृंखला एवं संचालन की पेचीदगियों को सीखें। वे सीखते थे कि पूंजी का प्रबंधन कैसे किया जाता हैं श्रमिक हड़ताल को कैसे संभाला जाता है और दीर्घकालिन विकास के लिये रणनीति कैसे बनाई जाती हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि आग के बिना धुआं नहीं होता। आज विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में हो रहे अशांति, तरह-तरह की घटनाएँ हमारा ध्यान खींचना चाहती कि युवा पीढ़ी दिग्भ्रमित हैं, चाहे वह व्यापारी वर्ग से हो, मध्यम वर्ग से या अन्य किसी वर्ग से। सभी परिस्थितियाँ पैदा होने के पीछे एक ही सोच है कि हम धन के पीछे भाग रहे हैं। हमारा पूरा ध्यान धन पर केन्द्रित हो गया हैं। हम अपने उत्तरदायित्व से अनजान हैं। हम यह नहीं समझ पा रहे है धन से ऊपर चरित्र है, जो कि सर्वोपरी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आज का युवा सुख सुविधा के लिये परिश्रम करने में विश्वास नहीं करता। उसे वह अपना अधिकार समझ बैठा है। आज का बड़ा सवाल यह है कि अगली पीढ़ी को अपनी जिम्मेदारी समझना चाहिए। सफलता के लिए आवश्यक है दिन रात मेहनत, कठिन से कठिन काम करना, विपरीत परिस्थितियों से जूझना एवं एक-एक सीढ़ी चढ़ते हुए प्रगति की ओर अग्रसर होना।

देश के व्यवसायिक वर्ग के परिवार में भी युवा वर्ग पारिवारिक कार्यालय के आकर्षण से उसी ओर खींचे जा रहें हैं। क्योंकि वे जोखिम मुक्त, तनाव मुक्त होता हैं। उसमें कोई सिरदर्द नहीं, संचालन में भूल होने की संभावना नहीं। कोई श्रमिक हड़ताल का खतरा नहीं। मध्यम श्रेणी के व्यवसायी वर्ग के युवा तो अब व्यवसाय करने की जगह नौकरी करना ज्यादा पसंद करते हैं। जैसा कि श्री हर्ष गोयनका ने कहा हैं कि "अब अगली पीढ़ी के लोगों के गोल्फ क्लब, शैंपन की बोतल या लेम्र्बेगिनी में घूमते हुए पाये जाने की अधिक संभावना हैं।" आज के युवा वर्ग पर चुटकी लेते हुए उन्होंने कटाक्ष किया है कि अक्सर देर से जागना, इंस्टाग्राम पर प्रेरक उद्धरण पढ़ना, बॉलीवुड शिक्षकों के साथ जिम सत्र में भाग लेना और शानदार छुट्टियों के रूप में छद्म बैठकें आयोजित करना आज के युवा की दिनचर्या हैं। श्री गोयनका के अनुसार – "उनके (युवा) के पास एक बहुत ही विशिष्ट सौंदर्य बोध भी हैं – जिनके जूतों के साथ गुच्ची याद प्रादा जैकेट - क्योंकि धन आरामदायक होना चाहिए।"

इसी सिलसिले में अगर हम समाज के हर क्षेत्र में सजावट बनाकर एवं दिखावट की ओर ध्यान दे तो हमें आभास हो जाएगा कि समाज में गिरावट कहाँ से आ रही हैं। समाज इन बातों को कब तक नजरअंदाज करेगा। यह जिस डाल पर हम बैठे हैं, उसी को काटने के समान हैं। वस्तुतः हम अपनी जड़े खोद रहे हैं। समाज में व्याप्त विकट स्थिति पर मौन घातक सिद्ध होगा।

अनवरत प्रयासों के सामने बाधाओं को झुकना पड़ता हैं।

आपणी बात

मार्च महीने की शुरुआत कोलकाता स्थित हिंदुस्तान क्लब में राजस्थानी साहित्य सम्मान कार्यक्रम से हुई। इस कार्यक्रम में राजस्थान के दो साहित्यकार डॉ. मंगत बादल एवं श्री रामजीलाल घोड़ेला को सम्मानित किया गया। दोनों ही साहित्यकार अपनी रचनाओं द्वारा राजस्थानी साहित्य में अपना स्थान बना चुके हैं। इस कार्यक्रम की विशिष्टता यह रही कि राजस्थान फाउंडेशन जयपुर की कमिश्नर डॉक्टर मनीषा अरोड़ा विशेष कर इसी कार्यक्रम के लिए जयपुर से पधारी। उन्होंने प्रवासी राजस्थानियों को राजस्थान सरकार द्वारा घोषित विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी दी। उनको सम्मेलन की गतिविधियों से अवगत कराने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम में समाज बंधुओं की उपस्थिति संतोषजनक रही।

दिनांक ८ मार्च को सम्मेलन में स्थित पुस्तकों को समाहित करके एक पुस्तकालय की शुरुआत की गई। राजस्थानी एवं हिंदी साहित्य के विभिन्न विधाओं की अनेकों पुस्तकों की सूची अब सम्मेलन कार्यालय में उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों में से कुछ पुस्तक दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण हैं। पुस्तकों की जानकारी ऑनलाइन भी पोस्टकरने की कार्रवाई चल रही हैं। उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित साहित्यकारों ने इस प्रयास की सराहना की हैं। आशा है कि पाठक एवं शोधकर्ता इसका लाभ उठा सकेंगे इस विषय में नए-नए सुझावों का स्वागत हैं।

इसी माह कोलकाता की प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्था श्री शिक्षायतन स्कूल में **संस्कार-संस्कृति-चेतना** कार्यक्रम संपन्न हुआ। छात्रों के बीच मैं, हमारे संस्कार संस्कृति के विषय में विस्तृत जानकारी देने का प्रयास किया। मुझे इस बात का परम संतोष है कि इस कार्यक्रम का सूत्रपात मैंने सन २०१७-१८ में किया था। श्री शिक्षायतन स्कूल में प्रधानाचार्य शिक्षिकाओं एवं छात्राओं ने इस कार्यक्रम की मुक्त कंठ से सराहना की हैं। उनके उद्गारों को पढ़कर मैं अभीभूत हूँ। पाठकों की जानकारी के लिए इन उद्गारों को समाज विकास में प्रकाशित किया जा रहा हैं। आने वाले दिनों में अन्य विद्यालयों में भी इस कार्यक्रम को आयोजित करने का प्रयास हो रहा हैं। सभी प्रांतो से मैंने अनुरोध किया हैं। इस कालम के माध्यम से मैं पुन: अनुरोध करता हूँ कि इस कार्यक्रम को सभी शाखाओं द्वारा आयोजित किया जाए। एक दो प्रांत को छोड़कर सभी प्रांतो से सकारात्मक प्रतिक्रिया का मुझे बेसब्री से प्रतीक्षा रहेगी। साथ ही **संस्कार-संस्कृति-चेतना** के विषय में १० सूत्रीय निवेदन सोशल मीडिया के माध्यम से प्रचारित - प्रसारित किया जा रहा हैं। सभी प्रांतो को इसमें आगे आने का पुन: अनुरोध हैं।

२२-२३ मार्च को सिलचर में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन का प्रांतीय अधिवेशन संपन्न हुआ। इसमें मुझे भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ। यह अधिवेशन अत्यंत व्यवस्थित रूप से आयोजित किया गया। खास बात यह है कि अधिवेशन सिलचर शाखा ने आयोजित की। इसके पीछे भी एक प्रेरणास्पद उदाहरण जानने को मिला जो कि इस प्रकार है - सिलचर शाखा में २५ सदस्य थे। प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश जी काबरा ने सिलचर के कर्मठ श्री मूलचंद जी बैद से संपर्क कर सिलचर के संगठन को मजबूती प्रदान करने का निवेदन किया। मूलचंद जी ने इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। आज इस शाखा मे सदस्यो की संख्या २५ से बढ़ा कर डेढ़ सौ तक पहुंच गई हैं। यही नहीं बैदजी ने सिलचर के आसपास चार और नई शाखाएं खुलवाने में नेतृत्व प्रदान किया। सिलचर शाखा का अधिवेशन कई मायने में भव्य था। उन्होंने २५० से अधिक सदस्यों के लिए सुचारु व्यवस्था की। उनके स्वागत में आत्मियता थी। उद्घाटन समारोह में स्थानीय परिवारों के सदस्यों ने जो सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम होगी। स्वागत गीत को इस प्रकार प्रस्तुत किया, उससे प्रभावित होकर मुझे भी कविता में ही अपनी भावनाओं को अपने शब्दों में बयान करने के लिए बाध्य होना पड़ा। पिछले दो वर्षों में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन जिस प्रकार से सभी क्षेत्रों में विकास दर्ज की है, वह सभी के लिए उदाहरण हैं। इस उदाहरण से हमें एक बार फिर यह सुदृढ़ होता है कि अनवरत प्रयासों के सामने बाधाओं को झुकना ही पड़ता हैं। काबरा जी ने अगले दो वर्षों में १०००० सदस्यों एवं १०८ शाखाओं का लक्ष्य लिया हैं। पिछले फरवरी के दौरे के समय ही मैंने यह भांप लिया था कि पूर्वोत्तर में सम्मेलन अप्रत्याशित उपलब्धियों की ओर बढ़ रहा हैं। साथ ही गुवाहाटी में प्रस्तावित छात्रावास के लिए भी वहाँ जमीन की रजिस्ट्री हो चुकी हैं। अधिवेशन के समय इस प्रकल्प के लिए सदस्यों की प्रतिबद्धता जाहिर हो रही थी एवं वे अपने योगदान के लिए आगे आकर घोषणा कर रहे थे। इस अधिवेशन में सम्मिलित होकर कई नए पुराने मित्रों से एक बार फिर से विचारों का आदान-प्रदान करने का मुझे सुअवसर प्राप्त हुआ। पूर्वोत्तर में सदस्यों में वैचारिक संपन्नता है और ऐसे सदस्यों की संख्या संतोषजनक हैं। खास बात यह है की वहां पर असमी साहित्य के साथ समरसता के प्रति जागरूकता हैं जबकि कुछ अन्य प्रदेशों में जैसे कि पश्चिम बंगाल आदि में समरसता का अभाव देखा जाता हैं।

अंत में आपसे विदा लेने के पहले सभी पाठकों को होली की रंगारंग शुभकामनाएँ एवं राजस्थान दिवस की हार्दिक बधाइयाँ।

शिवकुमार लोहिया

शिव कुमार लोहिया

मारवाड़ी कहावतों का संसार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से आज सम्मेलन सभागार में **'मारवाड़ी कहावतों का संसार'** विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता थे सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजेंद्र केडिया जिन्होंने कहावतों को संजोने पर बृहद रूप में काम किया हैं। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए राजेंद्र केडिया ने कहा कि कहावतें हमारी बातों में सलीका लाते है एवं गागर में सागर भरने का काम करते हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थानी भाषा में जितनी कहावतें हैं, विश्व की अन्य भाषाओं में देखने को नहीं मिलते। उनके अनुसार राजस्थानी कहावतें का प्रकाशन प्रथम में कोलकाता में हुआ। तत्पश्चात १५००० राजस्थानी कहावतों का कोष तैयार किया गया। आज के इस दौर में हमें भाषा और संस्कृति को बचा के रखना हैं। हमारे खान-पान, रहन-सहन और वेशभूषा में परिवर्तन हुए हैं। हमारे सोच में भी परिवर्तन हुआ हैं। उन्होंने बताया की कहावतों को हमें सकारात्मक रूप में देखना चाहिए। हर एक कहावतों के पीछे एक कहानी छिपी रहती हैं। उन कहानी के मर्म को समझ कर ही हम कहावतों का वास्तविक अर्थ समझ सकते हैं। विभिन्न कहावतों के विषय में उन्होंने विस्तार से चर्चा की एवं कई उदाहरण प्रस्तुत किये। उन्होंने अपने वक्तव्य को अत्यंत ही सरलता से प्रस्तुत किया जिसे सभी श्रोताओं ने मंत्र मुग्ध होकर सुना। उनके वक्तव्य के उपरांत उन्होंने श्रोताओं के जिज्ञासा का भी उत्तर दिया।

प्रारंभ में समारोह की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया ने सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं कहा कि आज राजस्थानी भाषा की मान्यता के साथ-साथ राजस्थानी भाषा का प्रचार-प्रसार एक बहुत बड़ा महत्वपूर्ण कार्य हमारे सामने हैं। उन्होंने कहा कि सम्मेलन निरंतर राजस्थानी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए कार्य कर रहा हैं। उन्होंने बताया कि राजस्थानी भाषा की मान्यता के लिए केंद्रीय गृह मंत्री को भी गत नवंबर माह में पत्र दिया गया हैं। इसके अलावा राजस्थानी भाषा के व्याकरण पर पुस्तक सम्मेलन कार्यालय में निशुल्क उपलब्ध रहता हैं। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि कम से कम अपने घर में मातृभाषा में ही आपसी वार्तालाप करें। विशेष कर घर के नए बच्चों को राजस्थानी भाषा से परिचय करवायें। उन्होंने कहा कि राजस्थानी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए सम्मेलन सभी सुझावों का स्वागत करता हैं।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार बंशीधर शर्मा ने राजेंद्र केडिया के कार्यो की सराहना की एवं कहा कि उन्होंने कहावतों पर १० खंड में पुस्तकें प्रकाशित करने के योजना बनाई है, जिसमें से दो प्रकाशित हो चुकी हैं एवं एक प्रकाशाधीन हैं। यह उनका राजस्थानी साहित्य के लिए अप्रतिम योगदान हैं। उन्होंने धन्यवाद ज्ञापन किया। सभा के प्रारंभ में अरुण प्रकाश मलावत ने केडिया जी का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी ने किया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री संजय गोयनका, डॉ. प्रियंकर पालीवाल, संजय बिन्नानी, आत्माराम सोंथालिया, जुगल किशोर जाजोदिया, अमित कहली, राजकुमार अग्रवाल, नीता मुरारका, अमित मुँधड़ा, गौरी शंकर शारदा, पियूष क्याल, जे. एन. मुँधड़ा, अरविन्द कुमार मुरारका, बिनोद बियानी, सांवर मल शर्मा, प्रकाश चंद्र हरलालका, रघुनाथ प्रसाद झुनझुनवाला, पवन बंसल, राम मोहन लाखोटिया, राजेंद्र राजा, संजीव कुमार केडिया, संदीप सेक्सरिया, संतोष रूँगटा, किरण रूँगटा, दिलीप दारुका, ललिता दारुका, श्रीगोपाल अग्रवाल, श्याम लाल अग्रवाल, नथमल भीमराजका, गोविन्द जैथलिया, नरेंद्र केडिया, ओम बिहानी, बिक्रम सामुई, शुभम राय एवं अन्य गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। संगोष्ठी का ऑनलाइन प्रसारण किया गया जिसमें देश के अनेक भागों से सैकड़ो लोगों ने भाग लिया।

सम्मेलन का समाज सुधार कार्यक्रम एवं नारी सशक्तिकरण एक दूसरे के पर्याय : शिवकुमार लोहिया

अंतरर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से **'राजस्थान की नारियाँ'** विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया ने की। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि नारी उत्थान एवं सम्मेलन का समाज सुधार कार्यक्रम को एक दूसरे के पर्याय कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। समाज सुधार के लिए पिछले ९० साल में सम्मेलन ने जो भी कार्य किए हैं उसका प्रमुख उद्देश्य रहा है नारी सशक्तिकरण एवं उनका उत्थान। पर्दा प्रथा उन्मुलन हो, नारी शिक्षा हो, विधवा विवाह हो, बाल विवाह का विरोध हो सभी कार्यक्रमों को सफल करने के लिए सम्मेलन के असंख्य कार्यकर्ताओं ने अपना योगदान दिया। उसी का फल है कि आज समाज में महिलाओं को हर क्षेत्र में सफलता का परचम लहराते हुए देख रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमें इस प्रयास को आगे भी जारी रखना है और जहां पर भी अतिशयोक्ति हो उसके बारे में विचार कर उसे फिर पटरी पर लाने की कोशिश हमें करते रहना चाहिए। आज समाज की नारियाँ अपना उत्थान और अपने भविष्य के बारे में स्वयं फैसला लेने में सक्षम हैं। पर उन्हें अपने संस्कार-संस्कृति एवं आने वाली पीढ़ी को संस्कारी और सुसंस्कृत करने के लिए हर संभव प्रयास करते रहना चाहिए। साथ ही साथ घर में राजस्थानी भाषा का प्रयोग करने के बारे में सजग रहना चाहिए।

राजस्थान सूचना केंद्र के सहायक निदेशक हिंगलाज दान रतनू बतौर मुख्य वक्ता कहा कि राजस्थान की नारियाँ शक्ति, भक्ति, त्याग एवं वीरता की प्रतीक हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान का इतिहास वहाँ की नारियों की गाथा से भरा हुआ हैं। उन्होंने पन्ना धाय, मीरा, करमा बाई, रानी पद्मिनी आदि का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राजस्थान तीज त्यौहार की धरती हैं। वहाँ की महिलाएँ राजस्थान की संस्कृति को विशिष्टता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है राजस्थान में प्रत्येक दिन तीज त्यौहार का दिन हैं। महिलाएँ अपने भावनाओं को, अपने संवेगों को अपने परिधान, नाना प्रकार के व्यंजन, नाना प्रकार के नृत्य संगीत के माध्यम से व्यक्त करती हैं एवं परिवार को जोड़े रखने में अपनी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। प्रसिद्ध वक्ता एवं लाइक कोच नैना मोर ने कहा कि पुराने इतिहास से सभी वाकिफ हैं। हम जानते हैं कि मीरा जैसे हमारे पूर्वज राजस्थान को गरिमा प्रदान करते हैं, लेकिन आज के दिन आज के समाज में आज की नारियाँ भी अपना सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करने का भरपूर प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा समाज में अगर कहीं कमियां है तो उसे हम प्रेम से बदल सकते हैं।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार बंशीधर शर्मा ने सम्मेलन के प्रयासों का सराहना की एवं कहा कि इस तरह के संगोष्ठियों से समाज में चैतन्यता आती हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि आगे भी इस तरह के कार्यक्रम होते रहेंगे। इस अवसर पर सम्मेलन में एक पुस्तकालय जिसका उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार लोहिया, हिंगलाल दान रतनू एवं बंशीधर शर्मा ने संयुक्त रूप से किया। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष केदारनाथ गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन किया। संगोष्ठी का सफल संचालन राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी ने किया। अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार लोहिया ने सभी को होली की शुभकामनाएं प्रेषित की। समारोह में राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री पवन कुमार जालान एवं संजय गोयनका, पियूष क्याल, सुरेश अग्रवाल, सांवर मल शर्मा, संजीव कुमार केडिया, बिनोद टेकरीवाल, नथमल भीमराजका, अरुण कुमार सोनी, अरविन्द मुरारका, तपन कुमार कुंडू, लक्ष्मण केडिया, प्रकाश किल्ला, रघुनाथ झुनझुनवाला, राज कुमार अग्रवाल, सीताराम शर्मा, शिबू दत्ता, रमेश कुमार तापड़िया, सीताराम अग्रवाल, बी. के. खेतान एवं आर खेतान एवं अन्य गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

राजस्थानी साहित्य सम्मान समारोह संपन्न

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से हिंदुस्तान क्लब में **राजस्थानी भाषा साहित्य सम्मान समारोह** का आयोजन किया गया जिसमें श्रीगंगानगर के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार **डॉ. मंगत बादल** को **सीताराम रुँगटा राजस्थानी साहित्य** सम्मान एवं लूणकरणसर के साहित्यकार **रामजीलाल घोड़ेला** को **केदारनाथ भागीरथी देवी राजस्थानी बाल-साहित्य सम्मान** से सम्मानित किया गया। इस समारोह में राजस्थान फाऊंडेशन जयपुर की आयुक्त डॉ. मनीषा अरोड़ा समारोह की मुख्य अतिथि थी। उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार द्वारा हाल ही में प्रवासी राजस्थानियों द्वारा राजस्थान में निवेश करने के लिए विशेष कार्यक्रम की घोषणा की गई हैं। उसके बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा प्रवासी राजस्थानियों के हितों की रक्षा के लिए एक नया विभाग, प्रवासी राजस्थानी सम्मान, प्रवासियों के मुद्दों के लिए प्रत्येक जिला में अतिरिक्त जिला प्रशासक की नोडल अधिकारी के रूप में नियुक्ति प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त उन्होंने राज्य में निवेश प्रोत्साहन नीति के विषय में भी विस्तार से बताया। उन्होंने इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन प्रवासी राजस्थानियों की देश में सबसे बड़ी संस्था है एवं उन्हें एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उन्होंने प्रवासी राजस्थानियों के लिए सभी प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

सर्वप्रथम अपने अध्यक्षीय संबोधन में राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवकुमार लोहिया ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा राजस्थानी भाषा प्रचार - प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि राजस्थानी भाषा की व्याकरण की एक पुस्तक सम्मेलन द्वारा निशुल्क वितरण की जा रही हैं। राजस्थानी भाषा को मान्यता देने के विषय में सम्मेलन द्वारा गृह मंत्री को भी पत्र द्वारा अनुरोध किया गया हैं। उन्होंने कहा कि मान्यता तो आवश्यक है ही पर उस से भी अधिक महत्वपूर्ण है कि राजस्थानी भाषा का हम अपने घरों में अपने बच्चों के साथ एवं आपस में प्रयोग करें। उन्होंने कहा कि भाषा संस्कार संस्कृति और इतिहास की संवाहक होती हैं। अगर भाषा लुप्त होती है तो हमारे सैकड़ों वर्षों की संस्कृति लुप्त होने का खतरा मंडराता हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थानी भाषा के दो लाख शब्दों का शब्दकोश प्रकाशित हो चुका हैं, जो कि दर्शाता है कि यह भाषा एक समृद्ध भाषा हैं। साथ ही यह भी माना जाता है कि इस भाषा में विश्व की अन्य भाषाओं की तुलना में सबसे अधिक कहावतें और मुहावरों का संग्रह हैं। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. हरिप्रसाद कानोडिया ने सम्मानित साहित्यकारों को बधाई दी एवं कहा कि सम्मेलन सदैव साहित्यकारों का सम्मान करता है एवं आगे भी करता रहेगा। प्रसिद्ध समाजसेवी एवं उद्योगपति गोविंद शारदा ने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि प्रवासी राजस्थानी अपने माटी से जुड़े हुए हैं। उन्होंने राजस्थान के संस्कार संस्कृति और भाषा को बचाने के लिए अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की एवं शुभकामनाएं दी।

साहित्यकार डॉ. मंगत बादल ने कहा कि मैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा मिले सम्मान एवं स्नेह से अभिभूत हूँ। इस तरह का सम्मान हमारे लिए बहुत ही गर्व की बात हैं। उन्होंने राजस्थाना भाषा में अपनी रचनाओं को सुनाया जिसे श्रोताओं ने सराहा। साहित्यकार रामजीलाल घोड़ेला ने उन्हें

मिले सम्मान के प्रति अपना आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि कोलकाता के प्रवासी मारवाड़ी राजस्थानी भाषा के प्रचार-

प्रसार एवं संरक्षण के लिए जो काम कर रहें हैं वह प्रशंसनीय हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थानी भाषा को हमें बचा के रखना है और इसकी मान्यता के लिए हर संभव प्रयास करना हैं। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा ने इस बात पर संतोष प्रकट किया कि राजस्थानी सरकार प्रवासी मारवाड़ियों के साथ एक संवाद स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं। उन्होंने कोलकाता में एक बृहद सूचना केंद्र को आवश्यक बताया। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष दिनेश जैन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। समारोह का सफल संचालन राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी ने किया। इस अवसर पर राजस्थान सूचना केंद्र कोलकाता के असिस्टेंट डायरेक्टर हिंगलाज दान रतनू एवं राजस्थान फाउंडेशन के अमित कुमार सिंघल, श्रीकुमार लाखोटिया विशेष रूप से समारोह में शिरकत की।

समारोह में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राम अवतार पोद्दार, संतोष सराफ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मधुसूदन सिकरिया, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री रतन शाह, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष केदारनाथ गुप्ता, राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री पवन कुमार जालान, वित्त उप समिति के चैयरमेन आत्माराम सोंथालिया, कुंज बिहारी अग्रवाल, नंदकिशोर अग्रवाल, राजेश सोंथालिया, अरुण कुमार गाड़ोदिया, अरुण प्रकाश मल्लावत, विश्वनाथ भुवालका, दीनदयाल धनानिया, राज बिजरानिया, बंशीधर शर्मा, जयप्रकाश सेठिया, शिव कुमार बगला, संजय बिनानी, अरुण कुमार सोनी आदि गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

समारोह की झलकियाँ

श्री शिक्षायतन स्कूल में संस्कार-संस्कृति-चेतना कार्यक्रम

श्री शिक्षायतन स्कूल के सहयोग से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का संस्कार संस्कृति चेतना कार्यक्रम श्री शिक्षायतन स्कूल परिसर में संपन्न हुआ। इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया ने हमारे संस्कार संस्कृति पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पश्चात सभ्यता भोगवाद पर निर्भर है जबकि हमारी सभ्यता हमारे संस्कार आध्यात्म पर टिका हुआ हैं। उन्होंने छात्राओं से अनुरोध किया कि वे घर में बड़े बुजुर्गों का सम्मान करें और स्वयं को एक उच्च कोटि के नागरिक बनाने का संकल्प ले। उन्होंने **संस्कार-संस्कृति-चेतना** कार्यक्रम के विषय में विस्तार से जानकारी दी। इन्होंने इस प्रकार के कार्यक्रम को आयोजित करने में सम्मेलन की ओर से स्कूल के शिक्षकों, पदाधिकारियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। लोहिया ने अपने वक्तव्य में संस्कार-संस्कृति एवं जीवन को किस प्रकार उच्चतम मान का बनाया जाए, उसके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला, जिसे सभी छात्राओं ने एवं अध्यापिकाओं ने सराहा।

श्री शिक्षायतन फाउंडेशन के प्रधान सचिव विनोद अग्रवाल ने मारवाड़ी सम्मेलन के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया कि **संस्कार-संस्कृति-चेतना** कार्यक्रम के माध्यम से युवा पीढ़ी में बुनियादी परिवर्तन के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने छात्राओं से अनुरोध किया कि आज के माहौल में स्वयं को प्रगति के पथ पर ले जाने का प्रयास निरंतर करते रहना चाहिए एवं रास्ते में आते हुए भटकाव से बचना चाहिए।

तत्पश्चात शिक्षायतन स्कूल के छात्राओं ने विदुर नीति चाणक्य नीति, गीता और रामायण के विभिन्न श्लोकों पर अपना अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया। साथ ही साथ इन विषयों पर एक क्विज प्रोग्राम भी आयोजित किया गया। विजेता छात्राओं को पारितोषिक दिया गया एवं प्रतिभागी सर्टिफिकेट प्रदान किया गया। सभी छात्राओं ने इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भाग लिया। कार्यक्रम में शिक्षायतन स्कूल की प्राचार्य श्रीमती संगीता टंडन अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय महामंत्री कैलाशपति तोदी राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री पवन जालान भी उपस्थित थे। संगीता टंडन ने आज के युग में संस्कार संस्कृति की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर जोर दिया एवं इस बारे में सजग रहने का अनुरोध किया। पवन जालान ने शिक्षा के विषय में अपने अनुभव छात्राओं के साथ साझा किया। विद्यालय में कार्यक्रम की अत्यधिक सराहना हुई हैं। प्रधानाचार्य, शिक्षिकाएं एवं छात्रों की प्रतिक्रियाएं अगले पन्नों में दी जा रही हैं।

शिक्षिकाओं की प्रतिक्रियाएँ

प्रधानाचार्य

संगीता टंडन
श्री शिक्षायतन स्कूल
कोलकाता

जो राष्ट्र अपनी परंपराओं और संस्कृति का सम्मान करता है, वह प्रगति को अपनाते हुए भी अपनी जड़ों से जुड़ा रह सकता हैं। भारत इस संतुलन का उदाहरण हैं। श्री शिक्षायतन स्कूल ने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सहयोग से एक कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें परंपरा और आधुनिकता के इस सामंजस्य को दर्शाया गया। हम अपने छात्रों को न केवल हमारे देश की संस्कृति, दर्शन और परंपराओं को समझाने के लिए बल्कि उन पर गर्व करने के लिए प्रेरित करने के लिए सम्मेलन के प्रति वास्तव में आभारी हैं। हमें जो विरासत मिली है उसका सम्मान करना और इसे दूर-दूर तक संरक्षित और फैलाने की दिशा में काम करना अनिवार्य हैं। **कार्यक्रम की सभी ने सराहना की।**

बिनीता चौधरी
(हिंदी शिक्षिका)

"संस्कार-संस्कृति-चेतना" कार्यक्रम का संचालन सफलतापूर्वक किया गया। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारे विद्यालय की छात्राओं ने ही नहीं, हम शिक्षिकाओं ने भी अपनी सभ्यता, संस्कृति के अमूल्य तत्वों को आत्मसात करने की प्रेरणा ग्रहण की। इस कार्यक्रम में छात्राओं की भागीदारी सराहनीय रही। **इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारी छात्राओं में सकारात्मक सोच के साथ ही एक अच्छा नागरिक बनने की प्रेरणा भी मिली।** संस्कृति समाज की आत्मा है और सभ्यता का उद्देश्य समाज को संगठित और सुव्यवस्थित करना है। आज के समय में हमारी सभ्यता और संस्कृति हमें एक अच्छा व्यक्ति बनने की प्रेरणा देती है।

आरती गुप्ता
(हिंदी शिक्षिका)

१० मार्च २०२५ को अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा श्री शिक्षायतन विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम से **एक शिक्षिका के रूप में मैं इस कार्यक्रम का हिस्सा बनकर अपने आप को अत्यन्त सौभाग्यशाली महसूस कर रही हूँ। मैंने इस कार्यक्रम से बहुत कुछ सीखा, जिसका प्रयोग मैं अपने तथा अपने छात्राओं के उज्ज्वल विकास के लिए अवश्य करूँगी।** इस कार्यक्रम के महानुभावों के वक्तव्य से मुझे अत्यन्त प्रेरणा मिली। जिसमें हमें समय का सदुपयोग, बड़े बुजुर्गों का सम्मान और छोटो को प्यार देने की बात बताई गई। इसके साथ ही हमें अपनी संस्कृति का सम्मान और आदर करना हमारा कर्तव्य है, इसके विषय में भी बताया गया। अतः इस कार्यक्रम के द्वारा अपनी संस्कृति के विषय में बहुत कुछ जानने और समझने का अवसर मिला।

मेरे अनुभव से कहूँ तो मुझे प्रश्नोत्तरी सत्र काफी मजेदार और रोचक लगा। जिसमें चाणक्य नीति, विदुर नीति, महाभारत और रामायण पर आधारित प्रश्नों को छात्राओं के समक्ष प्रस्तुत किया गया और सभी छात्राओं ने अपने सोच विचार के साथ सही उत्तर देने का प्रयास किया।

अनुपमा सिंह
हिंदी विभागाध्यक्ष
(कक्षा- ६-८)

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन और श्री शिक्षायतन स्कूल के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित **संस्कार-संस्कृति-चेतना**, कार्यक्रम अपने आप में अत्यंत सराहनीय रहा। इस कार्यक्रम ने हमारे युवा पीढ़ी में नैतिक मूल्यों, परंपराओं और अपनी संस्कृतियों को समझने हेतु बीजारोपण का कार्य किया।

सम्मेलन के वरिष्ठ सदस्य ने जिस प्रकार अपनी भावनाओं को बच्चों के समक्ष रखा और जितनी गहराई से उन्होंने अपने जीवन के अनुभवों को सबके साथ साझा किया, उससे निश्चित रूप से न केवल छात्राएँ बल्कि हम सभी शिक्षिकाएँ भी अत्यंत प्रभावित हुई। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के इस सराहनीय प्रयास की जितनी प्रशंसा की जाए, कम है।

छात्राओं की प्रतिक्रियाएँ

आध्या तिवारी
कक्षा-८

इस कार्यक्रम से हमें यह नई बातें जानने को मिलीं कि समय का सही उपयोग करना सफलता की कुंजी है। हमें अपने बुजुर्गों की बातों को ध्यान से सुनना चाहिए, क्योंकि उनके अनुभव हमें सही दिशा दिखा सकते हैं। साथ ही, हमें यह भी अहसास हुआ कि मोबाइल फोन आज के समय का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव बन चुका है। यह हमें पढ़ाई, परिवार और समाज से दूर कर रहा है, इसलिए हमें इसे संयमित रूप से इस्तेमाल करना चाहिए।

इस कार्यक्रम की सीखों को मैं अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करुँगी। मैं समय का सदुपयोग करुँगी, अनावश्यक रूप से मोबाईल का प्रयोग कम करुँगी और अपने बुजुर्गों के अनुभवों से सीखने का प्रयास करुँगी। साथ ही, मैं अपने संस्कारों और संस्कृति का सम्मान करुँगी और दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करुँगी।

कुल मिलाकर, यह कार्यक्रम हमारे लिए बहुत उपयोगी और शिक्षाप्रद रहा। इससे हमें हमारी संस्कृति और मूल्यों के महत्व को समझने का अवसर मिला, जिसे हमें अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

आद्या मौर्य
कक्षा-७

कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने मुझे अनमोल बातें बताई।

पहला, अगर हमें समाज में सुधार लाना है तो शुरुआत अपने आप से करना होगा।

दूसरी बात उन्होंने हमें समय का महत्व समझाया और बताया कि हमारी सबसे गलत सोच है कि हमें लगता है कि हमारे पास अभी समय है और कार्य को हम कल पर टाल देते हैं। इस बात को समझाते हुए मैं कबीर जी का दोहा प्रस्तुत करना चाहूँगी - "कल करे सो आज कर, आज करे सो अब, पल में प्रलय होएगी बहुरि करेगा कब?"

अदिति गुप्ता
कक्षा-९

१० मार्च २०२५ को श्री शिक्षायतन स्कूल में आयोजित "संस्कार: संस्कृति चेतना" कार्यक्रम को एक दर्शक के रूप में देखना मेरे लिए एक गहरा और समृद्ध अनुभव रहा। यह कार्यक्रम हमारी भारतीय संस्कृति और परंपराओं की सुंदरता और महत्व को समझने का एक अनूठा अवसर था। वक्ताओं ने न केवल संस्कारों की परिभाषा को स्पष्ट किया, बल्कि यह भी बताया कि ये हमारे जीवन को सही दिशा देने वाले मूल सिद्धांत हैं।

आश्रिता सिंह
कक्षा-९

"संस्कार: संस्कृति चेतना" कार्यक्रम एक अद्भुत अनुभव था, जिसने हमें हमारी संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों की गहरी समझ प्रदान की। कार्यक्रम में **श्लोक वाचन** और **क्विज प्रतियोगिता** जैसे रोचक सत्रों ने हमारी ज्ञानवर्धक यात्रा को और भी प्रभावी बना दिया।

मुझे इस कार्यक्रम का सबसे अच्छा हिस्सा अतिथियों के विचार और उनके अनुभव लगे, क्योंकि उन्होंने वास्तविक जीवन की कहानियों से यह सिखाया कि कैसे संस्कार और संस्कृति हमें एक बेहतर इंसान बनने में मदद कर सकते हैं। इस कार्यक्रम से मिली सीख को मैं अपने जीवन में इस तरह अपनाऊँगी कि **समय का सदुपयोग करूंगी, बड़ों का सम्मान करुंगी और संस्कारों को अपने दैनिक जीवन में उतारने का प्रयास करूंगी**।

यह न केवल एक कार्यक्रम था, बल्कि हमारे अंदर संस्कृति के प्रति चेतना जगाने का एक प्रयास भी था, जिसे मैं हमेशा याद रखूंगी।

वंशिका राज गुप्ता
कक्षा-९

"संस्कार संस्कृति चेतना" कार्यक्रम में एक संचालिका (MC) के रूप में भाग लेना मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव रहा। मंच से कार्यक्रम का संचालन करना न केवल मेरे आत्मविश्वास को बढ़ाने वाला था, बल्कि इसने मुझे हमारी महान संस्कृति और शास्त्रों से जुड़ने का भी अवसर दिया।

कार्यक्रम के दौरान जब विद्वान अतिथियों ने समय के सदुपयोग, आत्मविकास और पुस्तकों के महत्व पर अपने विचार साझा किए, तो मुझे एहसास हुआ कि ये बातें हमारे दैनिक जीवन में कितनी आवश्यक हैं। उन्होंने बताया कि छोटे बच्चों की संगति हमें तनावमुक्त रहने में सहायता कर सकती है और सोशल मीडिया से दूर रहकर पुस्तकों को अपना मित्र बनाना हमारी सोच को और समृद्ध कर सकता है।

दिव्याशी शर्मा
कक्षा-६

मैंने **"संस्कार: संस्कृति चेतना"** कार्यक्रम में भाग लिया था जो कि १० मार्च २०२५ को आयोजित हुआ था और **यह एक अद्भुत अनुभव था। इस कार्यक्रम से मैंने यह सीखा कि हमारी संस्कृति और परंपराएँ हमारे लिए कितनी महत्वपूर्ण हैं** और हमें उनका सम्मान करना चाहिए क्योंकि हमें उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

छात्राओं की प्रतिक्रियाएँ

अनिष्का बेड़ा
कक्षा-७

इस कार्यक्रम द्वारा मुझे चाणक्य, विदुर, रामायण, और भगवद गीता के बारे में जानने को मिला। मेरे छोटे-बड़े दोस्तों ने चाणक्य, विदुर, रामायण, और भगवद गीता के नीति को उल्लेखनीय करते हुए बताए।

मैं उस दिन अपने आप से वादा की थी की मैं समय का सदुपयोग करूँगी अत: समय पर काम करुँगी। इसके बावजूद मैं रोज एक घंटा अपने माता-पिता और दादा-दादी के साथ बात करूँगी। और मैं यह भी ठान ली हूँ की मैं बड़े होकर अपना समय बच्चों के साथ बिताऊँगी।

उन्होंने बहुत सुंदर प्रकार से अपने विचार व्यक्ति किये, उनके शब्दों में गहरी समझ और आत्मविश्वास था। अंत में, मैं यह बोलना चाहती हूँ कि उनकी वाणी में ऐसा आकर्षण था की हर कोई सुनने को मजबूर हो गया।

पलक वर्मा
कक्षा-९

मेरे स्कूल में **"संस्कार-संस्कृति-चेतना"** पर एक बहुत ही प्रेरणादायक कार्यक्रम आयोजित किया गया था, जिसमें राजस्थान से हमारे स्कूल के बड़े हेड आए थे। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हमें भारतीय संस्कृति, संस्कार और जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों के बारे में जागरूक करना था। इसमें यह बताया गया कि नारी अपने आप में सर्वोत्तम है और हिंदू धर्म में उनकी पूजा की जाती हैं। नारी को देवी के रूप में पूजा जाता है, और उनके बिना जीवन अधूरा हैं।

गायत्री पटेल
कक्षा-९

इससे मुझे अपने जीवन में सहायता करने वाले नैतिक गुणों और खासकर चाणक्य नीति के बारे में बहुत कुछ जानने को मिला। मैं चेष्टा करूंगी कि मैं इस महाग्रंथों तथा नैतिक मूल्यों को रोज अपने जीवन में अपनाउं और दूसरों को भी प्रेरित करूं।

मान्यता बोथरा
कक्षा-८

संस्कार-संस्कृति-चेतना आयोजित कार्यक्रम में हमने संस्कार को जाना संस्कृति को पहचाना और मन के भीतर छिपी चेतना को जागृत किया। आए अतिथि गण ने हमारे जीवन के सार भगवद्गीता, विदुर नीति, चाणक्य नीति के द्वारा हमारी आंतरिक भावना को चमकाया। हमने सिखा हम अपना जीवन किस प्रकार संवार सकते है और उसे निखार सकते हैं।

रागिनी झंवर
कक्षा-८

कार्यक्रम से मैंने बहुत कुछ सीखा। मुझे समझ आया के जीवन में कर्मो का महत्व क्या हैं और हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कैसे काम करना चाहिए। मुझे नई बातें जानने को मिलीं कि हमें अपने कर्मो के फल की इच्छा नहीं करनी चाहिए और निष्क्रिय नहीं होना चाहिए।

कृषि साहु
कक्षा-८

१० मार्च २०२५ को हमारे विद्यालय में **"संस्कार-संस्कृति-चेतना"** कार्यक्रम आयोजित हुआ। इसमें अतिथियों ने हमें धर्म, संस्कृति और नैतिक मूल्यों की महता बताई। उन्होंने समझाया कि हमारे प्राचीन ग्रंथों रामायण, महाभारत और रामचरितमानस में जीवन के हर पहलू की शिक्षा छिपी हैं।

इस कार्यक्रम से मैंने सीखा कि संस्कार केवल परंपरा नहीं, बल्कि हमारे चरित्र का आधार हैं। हमें माता-पिता, गुरुजनों और बुजुर्गों का सम्मान करना चाहिए। मुझे सबसे अधिक श्लोकों की व्याख्या पसंद आई, जिससे हमारी संस्कृति की गहराई समझने का अवसर मिला। प्रश्नोत्तर सत्र में चाणक्य नीति और अन्य ग्रंथों से जुड़े प्रश्नों ने मेरी जिज्ञासा बढ़ाई।

स्नेहा चटर्जी
कक्षा-८

इस कार्यक्रम में बहुत सारे विचारक एवं गुरुजनों को मुख्य अतिथियों के रूप में बुलाया गया था। **शुरुआत में हमारे विद्वान अतिथियों ने हमें जीवन जीने के कुछ प्रमुख नियम बताए, जिनके द्वारा हम भी सफलता की ओर बढ़ सकते हैं, जैसे अपने गुरुजनों की इज्जत करना तथा उनके आदर्शों को मानना। इसके अलावा, उन्होंने कई ऐसी बातें कहीं, जिन्हें सुनकर मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरी आँखें खुल गई हैं और मेरी अंतरात्मा भी इन बातों से सहमत है।**

आखिर में, इस कार्यक्रम का प्रिय हिस्सा मेरे लिए **श्लोक वाचन** प्रतियोगिता था, जिसमें मेरे सहपाठियों ने कई सुंदर और प्रसिद्ध श्लोकों का वाचन किया और हमें उनका अर्थ समझाया। इससे हमारा मनोरंजन भी हुआ और हमने बहुत सारी सीख भी ली।

मैं आशा करती हूं कि हमारा विद्यालय ऐसे कई प्रतियोगिताओं और कार्यक्रमों का आयोजन करता रहेगा।

ज्ञाना चौरसिया
कक्षा-७

मैंने चाणक्य नीति के अनुसार सफलता के सूत्र सीखे, रामायण, महाभारत और भगवद् गीता के नैतिक संदेशों को जाना, और भारतीय संस्कृति के मूल्यों को समझा। मैं इन सीखों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रतिबद्ध हूं। मैं हमेशा अपने बड़ों का सम्मान करूंगी और उनसे सीखूंगी। मैं अपने समय का सदुपयोग करूंगी और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मेहनत करूंगी।

इस प्रकार के कार्यक्रम युवाओं को अपनी संस्कृति और मूल्यों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करते हैं।

होली में उपाधियों का मुक्तहस्त वितरण

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
शिव कुमार लोहिया	अभिमन्यु
सीताराम शर्मा	बहुआयामी
नन्दलाल रूँगटा	न्यायप्रिय
डॉ. हरिप्रसाद कानोडिया	मारवाड़ी फाउंडेशन
रामअवतार पोद्दार	दमखम
पद्मश्री प्रह्लाद राय अगरवाला	खुशमिजाज
संतोष सराफ	पथ प्रदर्शक
गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया	मार्गदर्शक
दिनेश जैन	अपनी ढपली अपना राग
रंजीत कुमार जालान	प्रयास जारी है
मधुसूदन सीकरिया	मधुर मुस्कान
राज कुमार केडिया	सब ठीक है
डॉ. सुभाष अग्रवाल	मौके की तलाश में
कैलाशपति तोदी	बढ़े चलो
पवन जालान	भरोसेमंद
संजय गोयनका	प्रगतिशील
महेश जालान	इन से मिलिये
केदार नाथ गुप्ता	आगे की चिंता
आत्माराम सोंथलिया	सम्मेलन की सोच
भानीराम सुरेका	पैनी नजर
अरुण कुमार सुरेका	एलीट क्लब
हरिप्रसाद बुधिया	पहली कतार
सुरेंद्र भट्टर	युवा सम्राट
सुन्दर प्रकाश	जिम्मेदार
जुगल किशोर जाजोदिया	देखता हूँ
रमेश कुमार बुबना	अपनापन
सजन कुमार बंसल	एकल
सज्जन भजनका	हर दिल अजीज
सुषमा अग्रवाल	हाजिर जवाब
अनिल कुमार जाजोदिया	समय का अभाव
बनवारी लाल मित्तल	मारवाड़ी कांड
गोविन्द शारडा	गोविंद गोविंद
शंकर कारीवाल	क्या बात है
हरिचरण गुप्ता	दिल है कि मानता नहीं
पीयूष क्याल	कर्मठ
डॉ. श्याम सुंदर हरलालका	समाज चिंतक
पवन कुमार गोयनका	समाज सुधार
चांदमल अग्रवाल	मंजिलें और भी है
ओम प्रकाश खण्डेलवाल	मस्त मिजाज
रतन लाल शाह	राजस्थानी भाषा
विवेक गुप्त	चमकता सितारा
संजय कुमार हरलालका	अपना अंदाज
पवन कुमार सुरेका	अच्छी सलाह
दामोदर प्रसाद बिदावतका	देखी जाएगी
पोड़ेश्वर पुरोहित (आ.प्र.)	मैं भी हूँ
ओमप्रकाश अग्रवाल (आ.प्र.)	बढ़ते कदम
बाल किशन लोया (आ.प्र.)	समर्पित

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
युगल किशोर अग्रवाल (बिहार)	दिल का साथ
सदानंद अग्रवाल (बिहार)	पर्दे की पीछे
पुरुषोत्तम सिंघानिया (छत्तीसगढ़)	उत्तराधिकारी की तलाश
अमर बंसल (छत्तीसगढ़)	निभा रहा हूँ
सीताराम अग्रवाल (कर्नाटक)	भटकाव
शिव कुमार टेकरीवाल (कर्नाटक)	सिल्की-सिल्की
विजय कुमार संकलेचा (मध्य प्रदेश)	खोज बीन जारी है
श्याम सुंदर माहेश्वरी (म.प्र.)	मैं भी हूँ
निकेश गुप्ता (महाराष्ट्र)	देखता हूँ
सुदेश करवा (महाराष्ट्र)	नेक इरादे
राम प्रकाश भंडारी (तेलंगाना)	पोस्ट डेटेड चेक
दिनेश कुमार अग्रवाल (उत्कल)	चमकता सितारा
डॉ. सुभास चंद्र अग्रवाल (उत्कल)	सुलझे विचार
श्रीगोपाल तुलस्यान (उत्तर प्रदेश)	लोकप्रिय
टिकम चंद सेठिया (उत्तर प्रदेश)	एक अनार
लक्ष्मीपत भुतोड़िया (दिल्ली)	मोर्चा संभाल रखा है
सुंदर लाल शर्मा (दिल्ली)	दिल्ली दिलजलों की
नंदकिशोर अग्रवाल (पश्चिम बंग)	अहम ब्रह्मामि
संतोष खेतान (उत्तराखंड)	असमंजस
संजय जाजोदिया (उत्तराखंड)	मिलनसार
गोकुल चंद बजाज (गुजरात)	सब ठीक है
राहुल अग्रवाल (गुजरात)	समझ से बाहर
बसंत कुमार मित्तल (झारखंड)	अपना अंदाजे बया
रवि शंकर शर्मा (झारखंड)	अनुयायी
कैलाश चंद कावरा (पूर्वोत्तर)	यारो का यार
विनोद कुमार लोहिया (पूर्वोत्तर)	कायदे आजम
अशोक कुमार केडिया (तमिलनाडु)	क्या करू
मोहनलाल बजाज (तमिलनाडु)	सीख रहा हूँ
रमेश पेड़ीवाल (सिक्किम)	हिमालय की आवाज
सुरेश कुमार अग्रवाल (सिक्किम)	अवसर की खोज
अक्षय अग्रवाल (केरल)	नई पारी
विनय सिंघल (केरल)	अच्छी सोच
रमेश नांगलिया	समाजसेवी
नकुल अग्रवाल	पुराना घी
मीना देवी पुरोहित	सोनारकिल्ला
जय गोविन्द इन्दोरिया	खुशमिजाज
अनिल कुमार मल्लावत	समय की पहचान
डॉ. विजय केजरीवाल	लाफ्टर मैजिक
सूरज नागोरी	संस्कारी
अरुण चूड़ीवाल	बदलना है
रामानंद रुस्तगी	प्रयासरत
अरुण अग्रवाल (गुवाहाटी)	संगीत प्रेमी
दीपक जालान	कलम का सिपाही
नारायण प्रसाद डालमिया	पुरानी पहचान

होली में उपाधियों का मुक्तहस्त वितरण

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
सुरेश कुमार अग्रवाल	कृष्णभक्त
राजेश बजाज	अपरम्पार
जय प्रकाश अग्रवाल	सूरत नरेश
अजय कुमार अग्रवाल	नई पौध
हेमंत अग्रवाल	दूर दराज
उमा शंकर अग्रवाल	बनारसी बाबू
राजेश कुमार अग्रवाल	भरोसेमंद
रवि शंकर सीकरिया	लगे रहो मुन्ना भाई
सुनीता लोहिया	कलाकृति
अमित सरावगी	शिखर पर नजर
प्रमोद कुमार जैन	कभी कभार
ऋषि बागड़ी	ऊँची पहुंच
दीपक बुचासिया	शुभचिंतक
श्याम सुंदर अग्रवाल	ऊँची इलाज
अशोक पुरोहित	नेक इरादे
घनश्याम सुगला	साहित्य प्रेमी
शरत झुनझुनवाला	सुसंस्कृत
गोपाल अग्रवाल	भाई साहब
कमल नोपानी	राजनीतिक सिपाही
अरुण प्रकाश मल्लावत	भगवा लहर
सांवरमल शर्मा	सेनानी
जगदीश प्रसाद सिंघी	राजस्थानी पहचान
रवि लोहिया	हंसमुख
सज्जन बेरीवाल	साथी
आनंद कुमार अग्रवाल	ऊँचे लोग
राजकुमार तिवाड़ी	निवर्तमान
संदीप कुमार सिंघल	सोच के बताता हूँ
जगदीश गोलपुरिया	युवा तुर्क
रामपाल अट्टल	नेपथ्य में
अशोक कुमार तोदी	आता है याद मुझ को गुजरा जमाना
बाबूलाल धनानिया	भारतीय पोशाक
बनवारीलाल शर्मा (सोती)	समाज सेवी
भागचंद पोद्दार	अनुभवी
विनय सरावगी	अपनी सोच
विनोद तोदी	स्पष्ट वक्ता
विश्वनाथ भुवालका	सदा बहार
जगदीश प्रसाद शर्मा	स्वास्थवर्द्धक
शरद सरावगी (कटनी)	कर्मठ
नन्दलाल सिंघानिया	कानूनविद
ममता बिनानी	नारी शक्ति
निर्मल कुमार काबरा	सदभाव
रमेश कुमार सरावगी	गो सेवा
बृज मोहन गाड़ोदिया	भामा शाह
रतन लाल बंका (राँची)	साहित्य प्रेमी
डॉ. सांवर धनानिया	सरल सहज
प्रह्लाद राय गोयनका	रिलीफवर्क
नविन गोपालिका	बैंकर
पन्ना लाल वैद्य (दिल्ली)	मजबूत नींव
रमेश चंद गोपी किशन बंग (महाराष्ट्र)	न खाउंगा न खाने दूंगा
नकुल अग्रवाल (उत्कल)	अनुभवी
श्याम सुन्दर अग्रवाल (उत्कल)	समाज सेवा
ओम प्रकाश अग्रवाल (कोलकाता)	मैं भी हूँ
विजय किशोरपुरिया (विहार)	प्रगतिशील
सुरेश चौधरी (छत्तीसगढ़)	समय
कमलेश नाहाटा (मध्य प्रदेश)	मानो न मानो

सर्वश्री / श्रीमती	उपाधि
विजय डोकानिया (प.बं.)	उदासीन
विश्वम्भर नेवर	निर्भीक
अरुण अग्रवाल (गुवाहाटी)	संगीत प्रेमी
राजकुमार तिवारी (गुवाहाटी)	अपना मुकाम
सज्जन शर्मा (दिल्ली)	दिल्ली दिलवालों की
निर्मल सराफ (कोलकाता)	एकनिष्ठ
नरेंद्र तुलस्यान (कोलकाता)	व्यस्त
चंपा लाल सरावगी	मधुर मुस्कान
धर्मचंद अग्रवाल	सहयोगी
कमल कुमार सिंघानिया	साथ-साथ
आत्माराम कजारिया	सदविचार
प्रदीप जीवराजका	हरफनमौला
भगवानदास अग्रवाल	कर भला तो हो भला
विमल केजरीवाल	ऑनली विमल
राजेंद्र खंडेलवाल	फेसबुक क्राइम
राजेश ककरानिया	असमंजस
अशोक जालान	सिफ्टी
दिनेश कुमार अग्रवाल (उत्कल)	सबल नेतृत्व
पवन बंसल	मधुर मुस्कान
पवन टिबड़ेवाल	प्रेरणास्पद
रघुनाथ झुनझुनवाला	साथी हाथ वढ़ाना
महावीर मनकसिया	सुसंस्कृत
राज कुमार मिश्रा	मेट्रोमोनियल
शिव कुमार फोगला	प्रेमपुजारी
ईश्वर चंद अगरवाला	दानवीर
दीपक पारीक	दूध का दूध
संदीप गर्ग	मरुधर मेला
वी. डी. अग्रवाल	जलयोग
संजय जैन (टी टी)	ब्रांडिग
दिनेश जैन (गंगवाल)	पब्लिक रिलेशन
विनीता अग्रवाल	निभा रही हूँ
वीरेन्द्र कुमार धोखा	मठाधीश
राजीव कुमार अग्रवाल (सिलोटिया)	महाराजा अग्रसेन की जय
गोपाल पित्ती	सामाजिक
विष्णु कुमार तुलस्यान	प्रोग्रेसिव
शंकर जालान	ताजा खबर
बबीता अग्रवाल	निवर्तमान
अमित मुँधड़ा	मौके की तलाश
ओम प्रकाश पोद्दार (कर्नाटक)	कायदे की बाद
डॉ. मुकेश कोचर	जिंदादिल
अनिल डालमिया	सहज सरल
पवन जैन	रेगुलर
हिंगलाज दान रतनू	मायड़ की पुकार
नैना मोर	सेलेब्रेटी
राजेंद्र केडिया	सुसंस्कृत
प्रियंकर पालीवाल	साथी हाथ बढ़ाना
विनोद अग्रवाल	शिक्षा अनुरागी
अरविंद कुमार मुरारका	दिलदार
बंशीधर शर्मा	मारवाड़ी झंडा
संदीप सेकसरिया	साथी
संजय बिन्नाणी	कभी हृदय
राजेश कुमार सोंथलिया	मधुर मुस्कान

होली की हार्दिक शुभकामनाएँ!

उपलब्धियाँ

श्री बनवारी लाल जाजोदिया सम्मानित

इंडोनेशिया की सुग्रीव यूनिवर्सिटी में भारत के दो प्रमुख साहित्यकारों को विशेष अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। इंदौर के वरिष्ठ साहित्यकार और पद्मश्री नॉमिनी डॉ. बनवारीलाल जाजोदिया तथा असम के मार्गरिटा महाविद्यालय की हिंदी विभाग प्रमुख डॉ. पुष्पा सिंह को यह सम्मान दिया गया। हार्दिक बधाई!

डॉ. अभिनव अग्रवाल को मिला गोल्ड मेडल

सम्मेलन की किशनगंज शाखा के आजीवन सदस्य स्व. सुशील अग्रवाल के प्रतिभाशाली सुपुत्र डॉ. अभिनव अग्रवाल जिन्हें आज अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान, दिल्ली के ४९वें दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के द्वारा गोल्ड मेडल प्रदान किया। हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ!!

बसंत कुमार मित्तल को मिला परिचय पत्र

प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष बसंत कुमार मित्तल को झारखंड अलग राज्य आंदोलनकारी परिचय पत्र प्रदान किया गया है। हार्दिक बधाई!

अंचल अधिकारी का कार्यालय, रामगढ़
झारखण्ड अलग राज्य निर्माण
के आन्दोलनकारी
क्र० सं० 14 निर्गत तिथि 7:3:25
परिचय-पत्र
नाम :- बसंत कुमार मित्तल
पिता :- राधे श्याम मित्तल
ग्राम :- बंगाली टोला
पो. :- रामगढ़
थाना/जिला :- रामगढ़
प्रखण्ड :- रामगढ़ (झारखण्ड)
मो० :- 9431394318
अंचल अधिकारी

लेखक उमेश खंडेलिया और शोधकर्ता डॉ. जयंत बोरा पुरस्कृत

२७ फरवरी, जोरहाट के चिनामारा कॉलेज में सामाजिक विज्ञान अध्ययन और अनुसंधान के लिए मोहन चंद्र महंत स्मारक केंद्र ने कॉलेज की प्रबंधन समिति के संस्थापक अध्यक्ष और प्रमुख वकील, कानून शोधकर्ता और सेवानिवृत्त गुवाहाटी उच्च न्यायालय के वकील दुर्लभ चंद्र महंत की स्मृति में दो राज्य पुरस्कार शुरु किए हैं। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष २० मार्च को महंत की पुण्य तिथि पर प्रदान किया जाएगा। ये पुरस्कार दुर्लभ चंद्र महंत मेमोरियल राज्य रचनात्मक साहित्य पुरस्कार और दुर्लभ चंद्र महंत मेमोरियल राज्य रचनात्मक अनुसंधान पुरस्कार हैं। प्रथम वर्ष का दुर्लभ चंद्र महंत मेमोरियल स्टेट क्रिएटिव लिटरेचर अवार्ड धेमाजी के उमेश खंडेलिया को प्रदान किया जाएगा और दुर्लभ चंद्र महंत मेमोरियल स्टेट क्रिएटिव रिसर्च अवार्ड डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के प्रोफेसर और शोधकर्ता डॉ. जयंत बोरा को प्रदान किया जाएगा। २० मार्च को पुरस्कार समारोह के अवसर पर 'असम में सार्वजनिक क्षेत्र के कॉलेज और स्थानीय लोग' नामक व्याख्यान के संयोजन में आयोजित किया जाएगा। हार्दिक बधाई!

'होलिका दहन का महत्व और कारण'

होलिका दहन हिन्दू धर्म का एक प्रमुख पर्व है, जिसे फाल्गुन पूर्णिमा की रात को किया जाता है। यह असत्य पर सत्य, अधर्म पर धर्म और अहंकार पर भक्ति की विजय का प्रतीक हैं।

१. धार्मिक आधार

प्रह्लाद और होलिका की कथा

दैत्यराज हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु का विरोधी था और चाहता था कि सब लोग केवल उसी की पूजा करें।

लेकिन उसका पुत्र प्रह्लाद विष्णु भक्त था, जो उसके अहंकार के खिलाफ खड़ा रहा।

हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को मारने के कई प्रयास किए, लेकिन हर बार भगवान विष्णु ने उसकी रक्षा की।

हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को यह वरदान था कि वह अग्नि में नहीं जल सकती।

उसने प्रह्लाद को अपनी गोद में बैठाकर आग में बैठने का प्रयास किया, लेकिन भगवान विष्णु की कृपा से प्रह्लाद बच गया और होलिका जलकर भस्म हो गई।

इसी घटना की याद में होलिका दहन किया जाता है, जो यह सिखाता है कि भक्ति और सत्य की जीत होती है, जबकि अहंकार और अधर्म का नाश निश्चित है।

२. शास्त्रीय आधार:

अग्नि पुराण और होलिका दहन

अग्नि पुराण के अनुसार, अशुभ शक्तियों को नष्ट करने और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने के लिए होलिका दहन करना आवश्यक हैं।

यह अनुष्ठान नकारात्मक ऊर्जा और बुरी आत्माओं को दूर भगाने का प्रतीक हैं।

ऋतु परिवर्तन और शुद्धिकरण

होली के समय शीत ऋतु समाप्त होती है और ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता हैं। इस परिवर्तन के दौरान बीमारियों और संक्रमण का खतरा बढ़ जाता हैं।

होलिका दहन की अग्नि वातावरण को शुद्ध करती है और हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट करती हैं।

३. होलिका दहन की परंपरा और विधि

होलिका दहन कैसे किया जाता है?

१. अखंड लकड़ियों और उपलों से होलिका बनाई जाती है।

२. उसमें हल्दी, नारियल, गंगाजल, गोबर के उपले और अन्य पवित्र सामग्री डाली जाती हैं।

३. पूजा के बाद होलिका में अग्नि प्रज्वलित की जाती है और उसकी परिक्रमा की जाती हैं।

४. लोग अग्नि में नई फसल (जैसे गेहूँ की बालियां) सेंकते हैं, जिससे यह समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक बनता हैं।

४. होलिका दहन का आध्यात्मिक संदेश

अहंकार और अधर्म का अंत निश्चित हैं।

सच्ची भक्ति और सत्य की हमेशा विजय होती हैं।

बुरी आदतें, नकारात्मक विचारी और अज्ञान को जलाकर अच्छे कर्मों की ओर बढ़ना चाहिए।

निष्कर्ष:

होलिका दहन केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और वैज्ञानिक रूप से महत्वपूर्ण अनुष्ठान हैं। यह हमें यह सिखाता है कि हमारे भीतर के अहंकार, क्रोध, द्वेष और नकारात्मकता को समाप्त करके सच्चाई, प्रेम और भक्ति के मार्ग पर चलना चाहिए।

गणगौर व्रत की पीछे की कहानी

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार एक बार जब पार्वती मां ने भगवान भोलेनाथ को अपने पति के रूप में प्राप्त करने के लिए कठोर तप और साधना के साथ व्रत रखा था, तब भगवान शिव ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर माता पार्वती को दर्शन दिए। माता पार्वती के समक्ष प्रकट होकर भगवान शिव ने उनसे वर मांगने को कहा।

तब माता पार्वती ने वरदान में भगवान शिव को ही अपने पति के रूप में मांग लिया। उसके बाद भगवान शिव और माता पार्वती का विवाह हो गया। साथ ही भगवान शिव ने माता पार्वती को अखंड सौभाग्यवती रहने का वरदान भी दिया।

भगवान शिव से मिले इस वरदान को माता पार्वती ने अपने तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि उन्होंने कहा कि यह वरदान उन सभी महिलाओं के लिए भी है जो इस दिन मां पार्वती और भगवान शंकर की पूजा पूरे विधि-विधान से कर रही थीं। तभी से गणगौर व्रत सभी जगह प्रसिद्ध हो गया और आज सभी कुंवारी कन्याएं तथा महिलाएं इसे बड़ी श्रद्धा और प्रेम से करती हैं।

होळी री धमाळ

चालो देखण नै

चालो देखण नै बाईसा तारो बीरो नाचै रे,
चालो देखण नै बीरो नाचै रे क, थारो भाई नाच रे
चालो देखण नै....
आं रसियां री टोळी देखो ढोलक चंग बजावै रे,
घूमर घालै सायबो ओ लुळ-लुळ नाचै रे।
चालो देखण नै....
बणकर बींद सेवरो बांध्यो,
रंग में भरया बराती रे
मुंछ्यां हाळी बींदणी कै सागै नाच रे।
चालो देखण नै।
च्यार तो चंगा री जोड़ी बजारां में बाजै रे,
गजबण गोखै बैठी गोरड़ी, घूँघट सूं झांकै रे।
चालो देखण नै...।।

ओ दे गयो कागद पोस्टमैन

ओ दे गयो कागद पोस्टमैन, म्हारा पीव घर आसी जी,
आ शरद पूनम की रात चांदनी रंग बरसा सी जी,
घर म्हारो हरो हो जासी जी
ओ दे गयो कागद...
पतला-पतला फलका पोस्यूं उजली रान्धू खीर,
आँगन बैठ जिमास्यूं म्हारी नणदल बाई रा बीर,
म्हारे मन री बात सुणास्यूं,
जद म्हानै गलै लगासी जी आ शरद पूनम की रात चांदनी रंग बरसा सी जी
ओ दे गयो कागद...
कागल टकी लगाके करस्यूँ, मैं सोला सिणगार,
बाट जोवतां आंख्यां थकगी, कद आसी भरतार,
म्हारा मेहँदी राच्या हाथ बलम ने घणा सुहासी जी,
आ शरद पूनम की रात चांदनी रंग बरसा सी जी
ओ दे गयो कागद...
सावण बीत्यो फागण जावे, बीत्या तीज त्यौहार,
घणी अडीकी जद यो आयो मिलबा को त्यौहार,
ओ रंगां को त्यौहार बलम म्हानै रंग रंग जासी जी
आ शरद पूनम की रात चांदनी रंग बरसा सी जी
ओ दे गयो कागद....

गोरा गोरा गाल थारा

गोरा गोरा गाल थारा घूंघटिये में राखीजै
के निजर कोई लग जावैली मेळे में।
ओ-बांकड़ली मूंछयां नै, थोड़ी नीची नीची राखीजै
के गैल कोई पड़ जावेली मेळे मैं, गोरा गोरागाल...
अरे घायल हो ज्यावैली दुनिया, हळवां हळवां चालो,
जुल्म करे थारी आंखडल्यां, काजळियो मत घालो,
थारा नैना तीर कटार, कोई डुबैला मझधार,
मतना तीर चलाज्यो जी मेळे में, गोरा गोरा गाल...
न्याल हुई मैं बादिला, जो थां जिस्या भरतार मिल्या,
मद छकीया नै मोलिया, म्हारै सेजां रा सिणगार मिल्या,
सिर पर साफो किलंगीदारी, जी पर गौटे की किनार,
मत कीनै बतलाज्यो जी मेळे में, गोरा गोरा गाल....
अरे उड़ उड़ जावै लाल चुन्दड़ी, हवा घूंघट खोले,
फूल झड़े सौ रंग बिखरै, तू कोयलड़ी सी बोले,
थारा काळा काळा केश, जाणे बादलिया रो बेश,
मत चोटयां छितराज्यो जी मेळे में, गोरा गोरा गाल...

तारां री चुनड़ी

बाई सा रा बीरा जैपर जाज्यो जी,
आता तो ल्याज्यो तारां री चुनड़ी।
सुन्दर गोरी भांत बताओ जी,
किसीक ल्यावां तारां री चुनड़ी।
बाई सा रा बीरा हरा हरा पल्ला जी,
कसूमल रंग की तारां री चूनड़ी बाई सा रा बीरा...
म्हारी मिरगानैणी ओढ़ बताओ जी
किसीक सोवै तारां री चूनड़ीबाई सा रा बीरा...
बाईसा रा बीरा नणद हटीली जी ओढण नहीं दे
तारां री चूनड़ीबाई सा रा बीरा...
म्हारी चंदा बदनी ए ओढ़ बताओ जी महला में
निरखां तारां री चूनड़ीबाई सा रा बीरा।

।। पूजा से जुड़ी हुई अति महत्वपूर्ण बातें।।

एक हाथ से प्रणाम नही करना चाहिए।

सोए हुए व्यक्ति का चरण स्पर्श नहीं करना चाहिए।

बड़ों को प्रणाम करते समय उनके दाहिने पैर पर दाहिने हाथ से और उनके बांये पैर को बांये हाथ से छूकर प्रणाम करें।

जप करते समय जीभ या होंठ को नहीं हिलाना चाहिए। इसे उपांशु जप कहते हैं। इसका फल सौ गुणा फलदायक होता हैं।

जप करते समय दाहिने हाथ को कपड़े या गौमुखी से ढ़ककर रखना चाहिये।

जप के बाद आसन के नीचे की भूमि को स्पर्श कर नेत्रों से लगाना चाहिए।

संक्रान्ति, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्या के समय तुलसी तोड़ना निषिद्ध हैं।

दीपक से दीपक को नहीं जलाना चाहिए।

यज्ञ, श्राद्ध आदि में काले तिल का प्रयोग करना चाहिए, सफेद तिल का नहीं।

शनिवार को पीपल पर जल चढ़ाना चाहिए। पीपल की सात परिक्रमा करनी चाहिए। परिक्रमा करना श्रेष्ठ हैं।

कुमड़ा-मतीरा-नारियल आदि को स्त्रियां नहीं तोड़े या चाकू से नहीं काटें। यह उत्तम नही माना गया हैं।

भोजन प्रसाद को लाघंना नहीं चाहिए।

देव प्रतिमा देखकर अवश्य प्रणाम करें।

किसी को भी कोई वस्तु या दान-दक्षिणा दाहिने हाथ से देना चाहिए।

एकादशी, अमावस्या, कृष्ण चतुर्दशी, पूर्णिमा व्रत तथा श्राद्ध के दिन क्षौर-कर्म (दाढ़ी) नहीं बनाना चाहिए।

बिना यज्ञोपवित या शिखा बंधन के जो भी कार्य, कर्म किया जाता है, वह निष्फल हो जाता हैं।

शंकर जी को बिल्वपत्र, विष्णु जी को तुलसी, गणेश जी को दूर्वा, लक्ष्मी जी को कमल प्रिय हैं।

शंकर जी को शिवरात्रि के सिवाय कुंकुम नहीं चढ़ती।

शिवजी को कंद, विष्णु जी को धतूरा, देवी जी को आक तथा मदार और सूर्य भगवान को नगर के फूल नहीं चढ़ावे।

अक्षत देवताओं को तीन बार तथा पितरों को एक बार धोकर चढ़ावें।

नये बिल्व पत्र नहीं मिले तो चढ़ाये हुए बिल्वपत्र धोकर फिर चढ़ाए जा सकते हैं।

विष्णु भगवान को चावल गणेश जी को तुलसी, दुर्गा जी और सूर्य नारायण को बिल्व पत्र नहीं चढ़ावें।

पत्र-पुष्प-फल का मुख नीचे करके नहीं चढ़ावें, जैसे उत्पन्न होते हों वैसे ही चढ़ावें।

किंतु बिल्वपत्र उलटा करके डंडी तोड़कर शंकरजी पर चढ़ावें।

पान की डंडी का अग्रभाग तोड़कर चढ़ावें।

सड़ा हुआ पान या पुष्प नहीं चढ़ावे।

गणेश को तुलसी भाद्र शुक्ल चतुर्थी को चढ़ती हैं।

पांच रात्रि तक कमल का फूल बासी नहीं होता हैं।

दस रात्रि तक तुलसी पत्र बासी नहीं होते हैं।

सभी धार्मिक कार्यो में पत्नी को दाहिने भाग में बिठाकर धार्मिक क्रियाएं सम्पन्न करनी चाहिए।

पूजन करने वाला ललाट पर तिलक लगाकर ही पूजा करें।

पूर्वाभिमुख बैठकर अपने बांयी ओर घंटा, धूप तथा दाहिनी ओर शंख, जलपात्र एवं पूजन सामग्री रखें।

घी का दीपक अपने बांयी ओर तथा देवता को दाहिने ओर रखें एवं चांवल पर दीपक रखकर प्रज्वलित करें।

आप सभी को निवेदन है अगर हो सके तो और लोगों को भी आप इन महत्वपूर्ण बातों से अवगत करा सकते हैं।

संतान को संस्कार कैसे सिखाया जाय?

इस प्रश्न के उत्तर के लिए एक सच्ची कहानी बताता हूँ, जब मैं सिर्फ १० साल का बच्चा था। मैं हरे और स्वच्छ वातावरण में पला-बढ़ा हूँ। बहुत सारे खेत, फल और अन्य पेड़, वनस्पति उद्यान और क्या नही.

स्वाभाविक रूप से बड़े खेल के मैदान भी थें। शरारती बच्चों के झुंड के रूप में, मैं और दोस्त शाम को लगभग ५ बजे इकट्ठे होते थे और तब तक खेलते थे जब तक हमारे माता-पिता हमें एक कोने में ढूंढ नहीं लेते।

चूंकि फलों के पेड़ बहुत थे, इसलिए हम विभिन्न प्रकार के फल जैसे जामुन, आम, अमरूद के स्वाद का आनंद लिया करते। कभी-कभी हम दीवारों को भी लांघते और तथा कथित निजी बागानों से फलों को भी तोड़ते - निर्दोष चोरी की तरह।

किसी और के बागान में घुसना और फल प्राप्त करना काफी सुखद था। जो कुछ करने के लिए हमें मना किया गया था, उस का मजा ही कुछ और था।

तो यह अंकल मनविंदर थे जिनके बगीचे में अमरूद के पेड़ थे। हालाँकि चारों तरफ कई अमरूद के पेड़ थे, लेकिन हम दोस्तों ने उनके बगीचे के अमरूदों को सबसे स्वादिष्ट पाया।

हर दूसरे दिन अंकल मनविंदर के बगीचे में चुपके से जाते और फल चुराकर खाते। निश्चित रूप से उन्होंने देखा होगा कि अमरूद कहाँ गायब हो रहे हैं, हालाँकि उन्होंने हमें एक भी दिन नहीं रोका और ना ही किसी के माता-पिता को शिकायत की।

हर दिन हमारी स्कूल बस हमें एक बस स्टॉप पर छोड़ देती थी और हम में से कुछ को घर पहुँचने के लिए अंकल मनविंदर के घर के सामने वाली गली से गुजरना पड़ता था। इसमें मैं भी शामिल था।

एक दिन, जब मैं घर जा रहा था, अंकल बाहर खड़े थे। जब मैं उनके सामने से गुज़रा तो उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया।

"आज तो मर गए", मैंने सोचा "लगता है कि अंकल जी ने मेरे माता-पिता से भी शिकायत की होगी और इसका मतलब अच्छी पिटाई होने वाली है"।

"कृपया मुझे जाने दो", मैंने डर कर कहा।

"बस एक पल रुको, बच्चे। मुझे एक मिनट दो" उन्होंने कहा।

मेरे दिमाग में तो पिटाई की कहानियाँ चल रही थी।

उन्होंने हाथ छोड़ा और दोनों हाथों में कई अमरुद लिए और बहुत प्यार से उन्हें मुझे दिया। मैं एक शर्मीले अच्छे बच्चे की तरह चुप हो गया और मना कर दिया क्योंकि उपहार स्वीकार नहीं कर सकता था।

लेकिन उन्होंने फिर आग्रह किया। उनकी आवाज में इतना प्यार था जैसे अगर मैं अमरूद की भेंट को स्वीकार कर लूं तो वे शुक्रगुजार होंगे। मैंने स्वीकार किया, घर गया और अपने माता-पिता को अमरूद दे दिए। उन्होंने अंकल को धन्यवाद दिया।

खैर, यह आखिरी था जब मैंने उनके या किसी और के निजी बगीचे से फल चुराए। दिल में शब्दों से परे एक बदलाव था - अहोभाव था। उनके प्रति और सभी के लिए बस प्यार और कृतज्ञता थी।

अब अगर मैं निजी बागानों से फल चाहता तो मैं हमेशा अनुमति लेता। पुराने जमाने थे, लोगों में भी एक दूसरे के प्रति प्रेम था तो अनुमति के साथ भी फल मिल ही जाते थे।

जो मजा नहीं कर सकती वह प्रेम और दयालुता आसानी से कर जाते हैं। सजा तो केवल कुछ समय के लिए किसी बच्चे को रोक सकती है परंतु प्रेम हृदय ही परिवर्तित कर देता हैं। दंड का भी स्थान तो है परंतु प्रेम के सामने बहुत ही छोटा हैं।

तो बच्चों को अगर संस्कार सिखाने हैं, स्वयं संस्कारी बनें। स्वयं के हृदय में प्रेम और दयालुता को जन्म दे। प्रेम से सिखाने की कला सीखें।

रामचरितमानस संस्कार

शताब्दियों से सनातन धर्मावलंबियों की आस्था एवं श्रद्धा का अटूट केंद्र रहे तुलसीदास कृत रामचरितमानस की रचना संवत १६३३ में की गई थी, इसे ग्रंथ के रूप में संग्रहित करने के लिए तुलसीदास जी को कुल २ वर्ष ७ माह एवं २६ दिनों का समय लगा था जिसके उपरांत सन १५७६ में मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की तिथि को इसे पूर्ण किया गया था। रामनवमी की तिथि से प्रारंभ किये गए इस ग्रंथ के संकलन में तुलसीदास ने भगवान शिव की प्रेरणा से इसे अवधि भाषा में रचा जिसमें सम्पूर्ण रामायण को कुल ७ अध्यायों में समेटा गया हैं।

रामचरितमानस की ख्याति अद्वितीय है और भारत के उत्तरी भाग में तो इसका पाठन समाज के एक बड़े वर्ग की दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा है सामान्य भाषा शैली में मर्यादापुरुषोत्तम प्रभु श्रीराम के चरित्र को परिभाषित करता मानस अवधी की एक महान कृति है जिसका अध्ययन मात्र ही आने वाली पीढ़ियों को भारतीय संस्कृति के महान नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करता रहेगा।

'हनुमान तेहि परसा कर पुनि कीन्ह प्रणाम'
'राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम!'
'मेरी संस्कृति...मेरा देश...मेरा अभिमान'

असम में मारवाड़ी समाज का इतिहास लगभग २५० वर्ष पुराना है : कैलाश काबरा

मारवाड़ी समाज के बच्चे भी बने आईएएस और आईपीएस।
मारवाड़ी समाज के घटक अग्रवाल, माहेश्वरी और जैन समाज को आपस में विवाह शुरू करने, विवाह दिन में और मद्यपान मुक्त करने के आह्वान किया।
किसी भी कार्यक्रम के बैनरों में 'मारवाड़ी' शब्द उल्लेख करने की समाज से अपील।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन समाज के बच्चों के उच्च शिक्षा पर ध्यान देने की बात कही है। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अधिवेशन के दौरान मीडिया को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया और प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा ने कहा कि उनके समाज के बच्चे आईएस और आईपीएस बनकर निकले, यह चाहते हैं।

असम में उनकी जनसंख्या इतनी नहीं कि विधायक – सांसद बना सके। वह चाहते समाज के बच्चे आईएएस और आईपीएस बने। श्री काबरा ने कहा कि असम में मारवाड़ी समाज का इतिहास लगभग २५० वर्ष पुराना है। हम असम से बिल्कुल अलग नहीं है। असम की भाषा - संस्कृति में जुड़े हुए हैं। ज्योति प्रसाद अग्रवाल के उल्लेखनीय योगदान है। असम कला - संस्कृति का क्षेत्र रहा है। मारवाड़ी समाज अपने परिश्रम, सामाजिक कार्यों से मान प्रतिष्ठा बनाया है। जनसेवा में मारवाड़ी समाज की अग्रहणी भूमिका में है।

स्वास्थ्य, शिक्षा के साथ खेल के आयोजन पर भी फोकस किया गया है। श्री काबरा ने कहा कि असम सरकार ने राज्य के तीन शहरों में २४ घंटे दुकान खुले रहने का जो निर्णय लिया है वे उसका स्वागत करते है। अर्थव्यवस्था गति में तेजी आएगी। रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। मारवाड़ी समाज के घटक अग्रवाल, माहेश्वरी और जैन समाज को आपस विवाह शुरू करने, विवाह दिन में और मद्यपान मुक्त करने के आह्वान किया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया ने कहा कि पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अधिवेशन में समाज को संगठित रखने, युवाओं के भविष्य को बेहतर बनाने के उपायों, समाज की मातृ शक्ति को आगे ले जाने सहित उनका समाज शैक्षणिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से उन्नत करे इस पर मंथन हुआ। पूर्वोत्तर इकाई के कार्यों की सराहना की। पूर्वोत्तर में चल रहे जनसेवा पर संतोष व्यक्त किया।

शिक्षा, स्वास्थ्य सहित अनेक जनसेवा मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा चल रहा है। मारवाड़ी समाज का किसी के साथ द्वेष नहीं है। जहां भी रहती है स्थानीय आबादी के साथ मिलजुल कर रहने और क्षेत्रीय विकास में अपना योगदान देने में विश्वास रखती है। प्रेस वार्ता में कैलास पति तोदी, विनोद तोहिया, बुधमल वैद, मूलचंद दैद, सुंदरी देवी पाटवा की भी मौजूदगी रही।

राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में मारवाड़ी समाज का अभूतपूर्व योगदान : शिव कुमार लोहिया

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया ने कहा कि राष्ट्र की अर्थव्यवस्था और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में मारवाड़ी समाज का अभूतपूर्व योगदान हैं। सिलचर में पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के १७वें दो दिवसीय प्रांतीय अधिवेशन के खुला सत्र को संबोधित करते हुए उपरोक्त बात कही।

शाम की राजीव भवन में आयोजित खुला सत्र, समाज और सांस्कृतिक समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मारवाड़ी समाज के लोग देश-विदेश में जहां भी रहते हैं, अपनी संस्कृति के प्रचार-प्रसार में मारवाड़ी समाज का अभूतपूर्व योगदान है। मारवाड़ी समाज के लोग देश-विदेश में जहां भी रहते हैं, अपनी संस्कृति के आचार - व्यवहार का ध्यान रखते हैं। उद्यमशीलता और दानशीलता से विशिष्य पहचान बनाई है।

मारवाड़ी समाज अहिंसक, शाकाहारी, परिश्रमी है। मारवाड़ी समाज की पहचान पूरे विश्व में है। वहीं सम्मेलन के गठन के संबंध में जानकारी उन्नत की। सम्मेलन का उदय ही असम की धरती पर हुआ है। संगठन जनसेवा कर रही है। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने पर विभिन्न जागरुकता कार्यक्रम अभियान चलाया। भ्रूण हत्या के खिलाफ बड़ा अभियान किया। शिक्षा पर अधिक जोर दिया और बेटियों को शिक्षित बनाया जा रहा। सिलचर में आयोजित अधिवेशन से अभिभूत हैं। आठ लाइन कविता में समारोह की प्रशंसा की। सम्मेलन सदस्यों ऊर्जा भरते हुए कहा कि मारवाड़ी जोरो से हीरो बने है।

राष्ट्रीय महामंत्री कैलाश पति तोदी ने कहा हम राजनीति के क्षेत्र पीछे नहीं रहे हैं। देश के विभिन्न राज्यों में राजनीति में सक्रिय रूप से जुड़े हैं। बड़ी संख्या में विधायक मारवाड़ी समाज से हैं। हम मजबूत स्थिति में है। पूर्वोत्तर के प्राकृतिक सौंदर्य देखने लायक है। पर्यटन की अपार संभावना है। सत्र में एक और प्रमुख पदाधिकारी मधुसूदन सिकरिया ने कहा कि राष्ट्रीय अधिवेशन में जब भी शिरकत करते हैं, तो पूर्वोत्तर सर्वश्रेष्ठ प्रांतों में से एक के रूप चर्चा में रहता है। पूर्वोत्तर इकाई बहुत अच्छा काम कर रही।

इसके पूर्व मंच पर राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव कुमार लोहिया, महामंत्री कैलाश पति तोदी, मधुसूदन सिकरिया, पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा, महामंत्री विनोद लोहिया सह अशोक कुमार अग्रवाल, ओमप्रकाश खंडेलवाल, विनोद गोधा सहित सिलचर मारवाड़ी सम्मेलन के स्वागत अध्यक्ष बुधमल बैद, सिलचर शाखा अध्यक्ष मूलचंद बैद, महिला शाखा अध्यक्ष सुंदरी देवी पारवा को विराजमान कराया गया। मंच पर आसीन अतिथियों को साफा पहनाया गया। राजस्थानी अंग वस्त्र और मोमेंटो प्रदान कर सम्मान किया गया। बुधमल बैद ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि सिलचर की शांत एवं सौम्य धरती पर सम्मेलन का अधिवेशन का आयोजन गर्व की बात है।

उन्होंने पूर्वोत्तर के अलग अलग स्थानों से पहुंचे अतिथियों का स्वागत किया। मूलचंद बैद ने कहा कि एक समय था कि लोग सिलचर में अपनी बेटियों का व्याह नहीं करते थे, लेकिन आज अधिवेशन हो रहा। सिलचर समिति अच्छा काम कर रही। बराक घाटी के दो प्रमुख शहरों लक्षीपुर, बदरपुर के रूप में दो नई समिति की घोषणा हुई। सुंदरी देवी पाटवा ने कहा कि एक एक व्यक्ति से समाज का गठन होता है। संगठित होकर रहना है। समाज अच्छा है व्यक्ति अच्छा है। प्रांतीय कार्यकारिणी का भी सम्मान हुआ।

शिक्षा के क्षेत्र में स्व. धर्मचंद शिक्षा पुरस्कार डॉ. सुनीता अग्रवाल, साहित्य एवं सांस्कृतिक समन्वय के क्षेत्र में स्व. नंदकिशोर माहेश्वरी पुरस्कार उमेश जी, राजनीति के क्षेत्र में स्व. मुरलीधर सुरेका पुरस्कार विजय सोमानी, पत्रकारिता के क्षेत्र में जीएल अग्रवाल पुरस्कार ओंकार पारीख, उत्कृष्ट संस्था के क्षेत्र में श्री मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय और रुपकुंवर ज्योति प्रसाद अग्रवाल लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार मरणोपरांत स्व. शुभकरण जी शर्मा को दिया गया।

मालूम हो कि सुबह शहर के एक रिसोर्ट में आयोजित अधिवेशन की शुरुआत झंडोत्तोलन से हुआ। बिदित हो कि मारवाड़ी सम्मेलन, सिलचर शाखा और मारवाड़ी सम्मेलन, सिलचर महिला शाखा के आतिथ्य में अधिवेशन हो रहा। दीप प्रज्जवलन में पूर्वोत्तर प्रादेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा, महामंत्री विनोद लोहिया, मारवाड़ी सम्मेलन, सिलचर शाखा के अध्यक्ष मूलचंद वैद, मंत्री मदन राठी, सिलचर महिला शाखा की अध्यक्षा सुंदरी देवी पाठवा, मंत्री हीरा लाल अग्रवाल, स्वागत अध्यक्ष तथा मुख्य आयोजक बुधमल बैद, स्वागत मंत्री प्रदीप सुराणा, सह प्रायोजक महावीर प्रसाद जैन, बिमल गोथा सहित प्रदेशीय कारकदारिणी समिति के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

१७वाँ पूर्वोत्तर प्रांतीय अधिवेशन की झलकियाँ

मारवाड़ी सम्मेलन की ग्वालपाड़ा शाखा का गठन

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन (पूप्रमास) के प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा की उपस्थिति में मारवाड़ी सम्मेलन की तीन क्रमशः ग्वालपाड़ा, सापटग्राम एवं गोसाईगांव शाखा का शपथ ग्रहण समारोह अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किया गया।

पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष कैलाश काबरा के प्रयासों से सम्मेलन की ग्वालपाड़ा शाखा का गठन गत मंगलवार को हुआ। इस सभा का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में समाज के वरिष्ठ सदस्य मूलचंद सुराणा की अध्यक्षता में हुआ। ग्वालपाड़ा शाखा के सभी सदस्यों को प्रांतीय अध्यक्ष ने शपथ पाठ करवाया और प्रांतीय सांस्कृतिक संयोजक प्रमोद अग्रवाल ने सभी सदस्यों को फुलाम गमछा एवं आजीवन सदस्यता प्रमाण पत्र व बैच देकर सम्मान किया। आज की सभा में सर्वसम्मति से राजकुमार सरावगी को आगामी सत्र के लिए ग्वालपाड़ा शाखा का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। नव मनोनीत अध्यक्ष ने प्रमोद पारीक को सचिव पद पर नियुक्त किया। श्री काबरा ने नवमनोनीत अध्यक्ष श्री सरावगी को पद की शपथ दिलवाई। कार्यक्रम का संचालन प्रमोद सुराणा ने किया।

वहीं मारवाड़ी सम्मेलन सापटग्राम शाखा का पुनर्गठन किया गया। १८ नए सदस्यों के साथ शपथ ग्रहण समारोह गत मंगलवार को संपन्न हुआ।

गोसाईगांव शाखा का शपथ ग्रहण समारोह

इसी तरह गोसाईगांव शाखा का भी शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें १८ सदस्य को शपथ पाठ कराया गया।

सापटग्राम में मारवाड़ी सम्मेलन की नई कमेटी का गठन

घुबरी जिलांतर्गत सापटग्राम शाखा स्थित श्री श्री ठाकुरबाड़ी प्रांगण में पूर्वोत्तर प्रादेशीय मारवाड़ी सम्मेलन (पूप्रामास) को सापटग्राम शाखा की एक नई कमेटी गठित कर १५ आजीवन सदस्यों को शपथ पाठ भी कराया गया।

सभी आजीवन सदस्यों को पद लाभ प्राप्त करने पर एक-एक प्रशंसा पत्र भी प्रदान किया गया। इन कार्यक्रम में पूर्वोत्तर के अध्यक्ष कैलाश काबरा, प्रांतीय सांस्कृतिक संयोजक तथा राज्य स्तरीय को आर्डिनेटर प्रमोद अग्रवाल, मारवाड़ी समाज के स्थानीय वरिष्ठ नागरिक गोपाल पोद्दार आदि गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। पूप्रमास के अध्यक्ष कैलाश काबरा ने इस संगठन के मूल उद्देश्य एवं लक्ष्य पर प्रकाश डाला।

सापटग्राम शाखा के लिए अध्यक्ष कमल सिंघी सचिव आनंद कुमार अग्रवाल और अनूप पोद्दार को कोषाध्यक्ष के रूप में मनोनित कर एक नई कमेटी का गठन किया गया।

त्रैमासिक रिपोर्ट होजाई शाखा

अध्यक्ष : निरंजन सरावगी
पता : एन.एस.सी.बी. रोड, लालपट्टी, होजाई-७८२४३५ (असम)
दूरभाष : ९४३५१६८२५१
इमेल : niranjansarawgi@gmail.com
मंत्री : प्रमोद मोर
पता : ठाकुर बाड़ी रोड, होजाई-७८२४३५ (असम)
दूरभाष : ९४३५१६८७८४
कोषाध्यक्ष : दीपक चनानी
पता : जे.के. केडिया रोड, होजाई-७८२४३५ (असम)
दूरभाष : ९४३५१६८१३२

१. **वर्तमान सदस्य संख्या** : आजीवन ३६ साधारण ११ (नए सदस्यों सहित)

२. **सम्पादित कार्यक्रम का ब्यौरा** :

(क) पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रान्तीय कार्यकारिणी सभा जागीरोड में होजाई शाखा से निरंजन सरावगी, प्रमोद मोर, प्रवीन सरावगी, सीताराम दायमा, ओम प्रकाश झँवर ने प्रतिनिधित्व किया।

(ख) सम्मेलन के सदस्यों द्वारा होली, टोली के साथ मिलकर घर-घर जाकर चंगवादन का कार्यक्रम हुआ।

३. **प्रांतीय एवं राष्ट्रीय बैठक/अधिवेशन/कार्यक्रमों में अंशग्रहण:**

कार्यक्रम : प्रान्तीय कार्यकारिणी सभा, जागी रोड
सदस्य उपस्थिति संख्या : ५

प्रांतीय अध्यक्ष का दौरा

१४ मार्च २०२५, लेटकुपुखूरी (बिहपुरिया), आज श्री श्री शंकरदेव के प्रिय शिष्य श्री मन्त माधवदेव की जन्मभूमि पर आयोजित अंकिया नाट भावना समारोह के अवसर पर प्रदर्शित श्री मन्त माधवदेव रचित 'भोजन बिहार' नाटक के समय विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रान्तीय अध्यक्ष कैलाश काबरा गुवाहाटी से पधारे। उनके साथ मोरान, बिहपुरिया, नारायणपुर, बन्दरदेवा, लखीमपुर से कई सम्मेलन सदस्यों व पदाधिकारियों ने इस कार्यक्रम के समय अपनी उपस्थिति दर्ज की। काबरा जी ने नवनिर्मित मणिकूट के लिए ५ लाख रुपये का अनुदान दिया व उन्होंने गुरुजनों से आशीर्वाद लेकर उपस्थित समाज बंधुओं को सम्बोधित भी किया।

गुवाहाटी से आते समय काबरा जी ने गोहपुर बिहाली शाखा के अध्यक्ष अजय मोर व वहाँ के समाजबंधुओं से मुलाकात की।

बिहपुरिया पहुँचने पर गमल जी बाहेती के निवास स्थान पर बिहपुरिया शाखा के अध्यक्ष व समाज बन्धुओं से होली की रामा श्यामा के बाद समाज के हर सदस्य को सम्मेलन से जोड़ने व बिहपुरिया नारायणपुर धौलपुर को मिलाकर एक महिला शाखा गठन को लेकर चर्चा हुई व श्री कृष्णा बाहेती को इसका संयोजक नियुक्त किया गया।

इस अवसर पर उनकी सुपुत्री तृष्णा महेश्वरी को MA परीक्षा में डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक मिलने पर अभिनन्दन किया गया। लेटकुपुखूरी से लौटते समय कमल जी बाहेती के निवास स्थान पर अल्पाहार के समय फिर एक बार सम्मेलन के विस्तार व सम्मेलन का मूल सूत्र **'हर घर सम्मेलन'** पर प्रयास करने को लेकर चर्चा हुई। सायं ४ बजे काबरा जी ने गुवाहाटी के लिए प्रस्थान किया। जाते समय उन्होंने गोहपुर बिहाली के सचिव दीपक अगरवाल व वहां के समाज बन्धुओ से एक बार फिर मुलाकात की।

आज की इस यात्रा समाज व संगठन हित को साधने में सम्मेलन का एक सकारात्मक प्रयास था। स्थानीय समाज के साथ समन्वय स्थापना की ओर एक कदम भी था।

इस अवसर पर मोरान से बिरेन अगरवाला व मनोज अगरवाला, लखीमपुर से छत्तर सिंह गिरिया, राज कुमार सराफ, माणिक लाल दम्माणी, बन्दरदेवा से ओम प्रकाश पचार, हीरालाल अगरवाला, प्रमोद अगरवाला, नारायणपुर से रविन्द्र राठी, जयदीप चांडक, बिहपुरिया से कमल बाहेती, जुगल महेश्वरी, बिनीत हरलालका सहित कई गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सोनारी शाखा द्वारा 'गृहस्थ पंचांग' का वितरण

'पर्व त्योहार, तिथि वार' की जानकारी सरलता से प्राप्त हो, इसी उद्देश को पूर्ण करने हेतु मारवाड़ी सम्मेलन 'सोनारी शाखा' की ओर से २५० पीस 'गृहस्थ पंचांग' का वितरण सोनारी के मारवाड़ी परिवारों के बीच वितरण किया गया।

उपरोक्त कार्यक्रम का प्रारंभ आनंद अग्रवाल की अध्यक्षता में समाज के वरिष्ठ सदस्य आदरणीय 'श्री शंकर लाल अग्रवाल' के द्वारा एवं राष्ट्रीय कार्यकारणी सदस्य 'श्री दीपक पारीक' की उपस्थिति में किया गया।

इस अवसर पर श्री दीपक पारीक ने शाखा की प्रशंसा करते हुए कहा शाखा का समाज मे सक्रिय रहने से संगठन का विस्तार होने के साथ-साथ सशक्त होता हैं। सशक्त संगठन हर चुनौतियों का सामना कर समाधान कर सकता हैं। इसीलिए राष्ट्रीय अध्यक्ष 'श्री शिव कुमार लोहिया' हमेशा कहते है की सम्मेलन के प्राण शाखा में बसते हैं।

शाखा अध्यक्ष श्री आनन्द अग्रवाल ने पंचांग सहित कार्यक्रम की जानकारी झारखंड प्रांतीय उपाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश रिंगासीया को दिया।

कार्यक्रम में प्रांतीय कार्यकारणी सदस्य बलराम अग्रवाल ओम प्रकाश अग्रवाल, महामंत्री विकेश दीवान, कोषाध्यक्ष महावीर अग्रवाल(ताऊ), अरविंद अग्रवाल, प्रवक्ता महेश गुप्ता उपस्थित थे।

दुमका जिला द्वारा 'होली मिलन समारोह'

दुमका जिला मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा होली मिलन समारोह का आयोजन स्थानीय मारवाड़ी चौक में बड़े ही धूम धाम से मनाया गया।

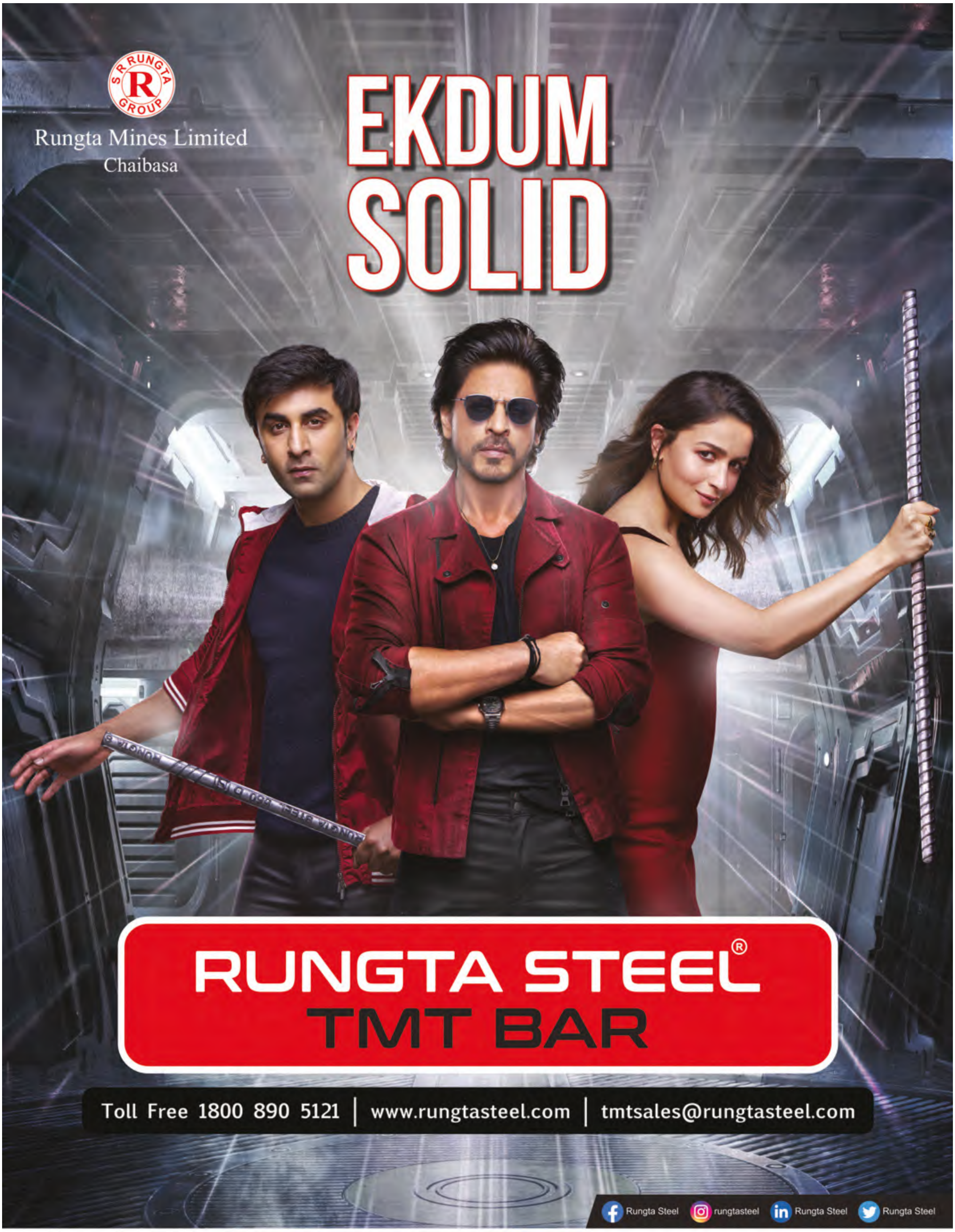

Rungta Office, Nagpur Parishad Complex, Chaibasa, Jharkhand-833201

Apollo
TOUCHING LIVES

Certificate No.: M-0342
NABL Accredited

Apollo Clinic
Expertise. Closer to you.

P-72, Prince Anwar Shah Road, Opp. South City Mall, Kolkata-700 045
Tel. : 4021-2525-55, E-mail : pashahroad@theapolloclinic.com

SERVICES AT A GLANCE

- Laboratory Services - Advanced Automatic Equipments
- Radiology
  - MRI / CT / Scan | - Digital X-Ray
  - Ultrasonography | - Colour Doppler Study
- Cardiology
  - ECG | - Echo-Cardiography
  - Echo-Colour Doppler | - Holter Monitoring
  - Treadmill Test (TMT)
- Wide Range of Pathology
- Pulmonary Function Test
- UGI Endoscopy / Colonoscopy
- Physiotherapy
- EEC / EMG / NCV
- General & Cosmetic Dentistry
- Elder Care Service
- Sleep Study (PSG)
- EYE / ENT Care Clinic
- Gynae and Obstetric Care Clinic
- Haematolgy Clinic
- Personalised Care (Injection, Dressing, ECG etc.) at your doorstep
- Health Check-up Packages
- Online Reporting
- Report Delivery

Home Blood Collection

(033) 4021-2525, 97481-22475

98301 96659

Consultation I Diagnostics I Dentistry I Health Checks

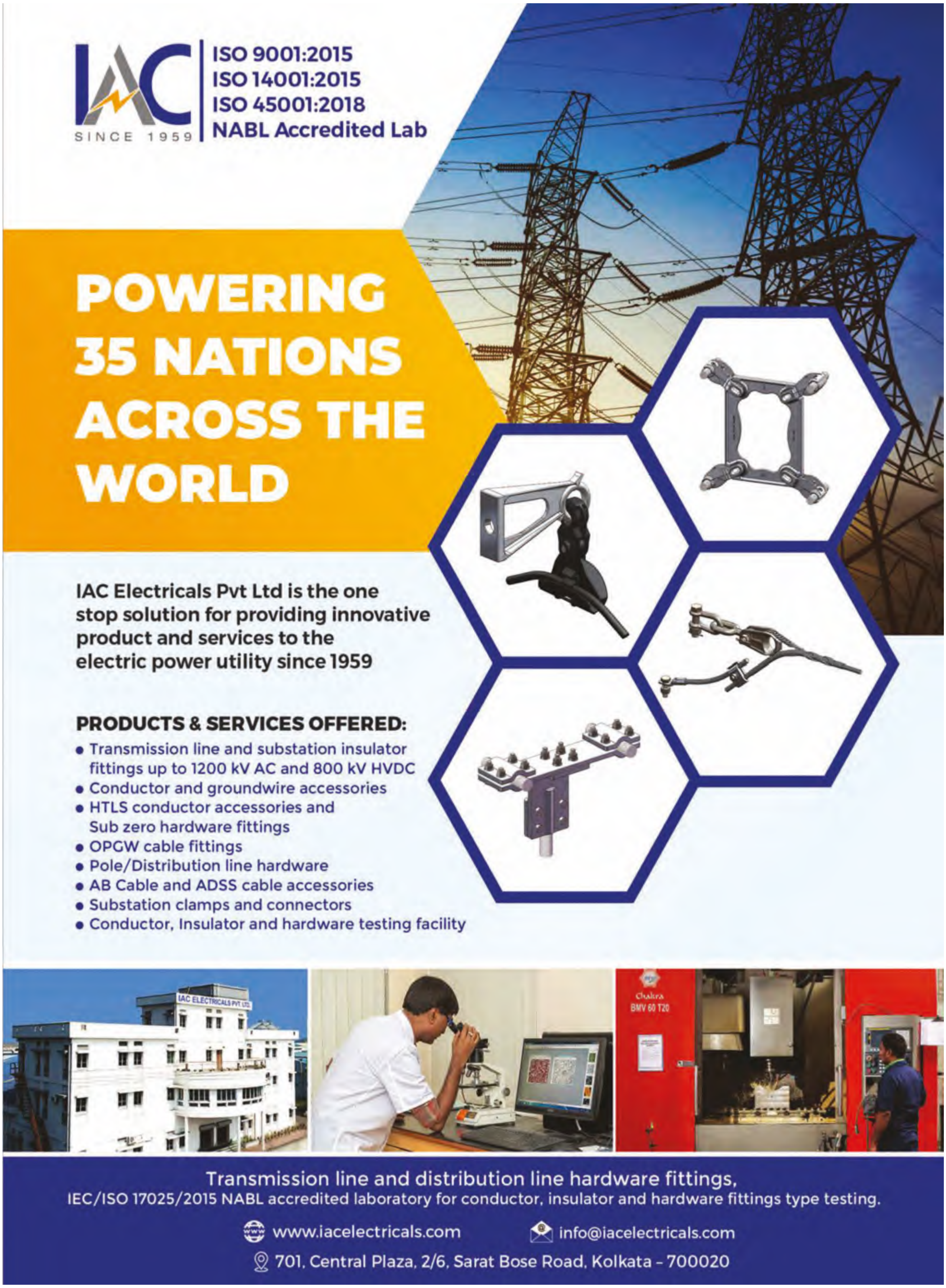
IAC
SINCE 1959
ISO 9001:2015
ISO 14001:2015
ISO 45001:2018
NABL Accredited Lab
POWERING 35 NATIONS ACROSS THE WORLD
IAC Electricals Pvt Ltd is the one stop solution for providing innovative product and services to the electric power utility since 1959
PRODUCTS & SERVICES OFFERED:
• Transmission line and substation insulator fittings up to 1200 kV AC and 800 kV HVDC
• Conductor and groundwire accessories
• HTLS conductor accessories and Sub zero hardware fittings
• OPGW cable fittings
• Pole/Distribution line hardware
• AB Cable and ADSS cable accessories
• Substation clamps and connectors
• Conductor, Insulator and hardware testing facility
IAC ELECTRICALS PVT LTD
Transmission line and distribution line hardware fittings,
IEC/ISO 17025/2015 NABL accredited laboratory for conductor, insulator and hardware fittings type testing.
www.iacelectricals.com
info@iacelectricals.com
701, Central Plaza, 2/6, Sarat Bose Road, Kolkata - 700020

Our expert orthopaedic surgeons provide advanced care for a wide range of musculoskeletal conditions, including joint replacements, sports injuries, and spine care.

What We Offer:

- Comprehensive Ortho Treatments
- Advanced Rehabilitation
- Cutting-Edge Technology and Diagnostics
- Highly-Trained Clinical Teams

To know more | Manipal Hospital Kolkata
033 6680 0000

प्री वेडिंग ना करने का निर्णय

संबलपुर के पूर्व शाखा अध्यक्ष श्री ज्ञान प्रकाश अग्रवाल की प्रेरणा से उनके परिवार से श्री संतोष अग्रवाल तथा श्रीमती सबिता अग्रवाल ने अपनी पुत्री के विवाह अवसर पर प्री वेडिंग न करने का निर्णय लिया प्रांतीय अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल ने पुरे परिवार को सम्मानित किया तथा सामाजिक निर्णय का पालन करने हेतु धन्यवाद दिया।

बरगढ़ मंडलीय बैठक संपन्न

संकल्पों के साथ संपन्न हुई बरगढ़ मंडल की मंडलीय बैठक, दिनांक २ मार्च २५ को पद्मपुर में पद्मपुर शाखा के आतिथ्य में १२५ से अधिक प्रतिनिधि तथा सभी ९ शाखाओं की उपस्थिति में प्रारंभ हुई, मंच पर प्रांतीय अध्यक्ष दिनेश अग्रवाल, महासचिव श्री सुभाष अग्रवाल, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्री गोविंद अग्रवाल, मंडल उपाध्यक्ष श्री किशन अग्रवाल, सचिव श्री विनोद अग्रवाल, मंडल पंचायत चेयरमैन श्री किशोर अग्रवाल, पद्मपुर शाखा अध्यक्ष श्री अमरदीप अग्रवाल, शाखा सचिव श्री जगदीश अग्रवाल उपस्थित थे, मंच संचालन श्री सुनील अग्रवाल ने किया, सुंदर स्वागत गीत तथा नृत्य से अतिथियों का स्वागत किया गया, बड़ी संख्या में महिला समिति तथा युवा मंच के सदस्यों की भी उपस्थिति रही, सभी शाखा अध्यक्षों की रिपोर्ट के बाद विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई तथा सभी ने संगठन के विस्तार हेतु अपनी सहभागिता सुनिश्चित की, प्री-वेडिंग, तथा सामाजिक मूल्यों में सुधार हेतु महिलाओं तथा पुरुषों ने समवेत संकल्प लिया, विशिष्टकार्यो हेतु अंचल के कार्यकर्ता तथा समाज सेवियों को सम्मानित किया गया, पाईकमाल शाखा के पूर्व अध्यक्ष श्री रामकुमार गुप्ता को उनके परिवार की शादी में प्री-वेडिंग न करने हेतु सम्मानित किया गया, उत्साह के वातावरण में नए संकल्पों के साथ दोपहर के भोज के साथ सभा का समापन हुआ, पद्मपुर अध्यक्ष श्री अमरदीप अग्रवाल तथा पुरी टीम की सुंदर व्यवस्था हेतु सभी सदस्यों ने भूरी भूरी प्रशंसा की।

मनमोहक नृत्य नाटिका ने सबका मोहा मन

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन बरगढ़ शाखा ने श्री गोपाल गौशाला परिसर में भव्य होली मिलन समारोह का आयोजन किया। शाखा अध्यक्ष जगदीश गोलपुरिया ने कार्यक्रम का कुशल संचालन किया। इस अवसर पर बरगढ़ विधायक अश्विनी षड़ंगी, पूर्व विधायक साधु चरण नेपाक, प्रशांत बेहरा सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। होली मिलन समारोह में मारवाड़ी समाज के करीब २००० से अधिक सदस्य सम्मिलित होकर फूलों की होली के साथ सामूहिक अन्नकूट का भरपूर आनंद लिया। कार्यक्रम की भव्यता को बढ़ाने के लिए कोलकाता की मनमोहक नृत्य नाटिका का मंचन किया गया। जिसमें कलाकारों ने भगवान कृष्ण और राधा की झांकी प्रस्तुत कर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस रंगारंग आयोजन में समाज के लोगों ने मिलकर फूलों की होली खेली और हर्षोल्लास के साथ त्यौहार का आनंद लिया। इस सफल आयोजन में प्रमुख रूप से सरोज अग्रवाल, पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष श्याम सुंदर अग्रवाल, प्रांतीय मंडल उपाध्यक्ष किशन लाल अग्रवाल, महेश अग्रवाल, दिलीप सावडिया, विजय अग्रवाल, केशव अग्रवाल, राजू जैन सहित समाज के अन्य सदस्य सक्रिय रूप से उपस्थित रहें। मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा आयोजित यह होली मिलन समारोह आपसी सद्भाव और सामाजिक एकता का प्रतीक बन गया, जिसने सभी के मन में आनंद और उल्लास का संचार किया।

अंगुल शाखा द्वारा कवि सम्मेलन

होली के अवसर पर अंगुल शाखा द्वारा विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में समाज बंधु उपस्थित रहे।

प्रांतीय समाचार : उत्कल

जमकर उड़े अबीर-गुलाल

बामड़ा समेत कुचिंडा अनुमंडल में हर्षोल्लास के साथ रंगों का त्यौहार होली संपन्न हुआ। बामड़ा मारवाड़ी समाज ने भी जमकर होली खेली, गोपाल अग्रवाल की ईंट फैक्ट्री परिसर में होली मिलन का आयोजन किया गया। इसमें समाज के लोगों ने शामिल होकर एक साथ होली खेली। होली के गीतों के साथ जमकर थिरके, फव्वारे में समाज के लोगों ने रैन डांस का भी आनंद लिया। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, बामड़ा शाखा के तत्वावधान में आयोजित होली मिलन समारोह में रंग, अबीर, गुलाल के साथ लजीज व्यंजनों का भी इंतजाम किया गया था। आयोजन में यूपीएमएस शाखा अध्यक्ष सुनील लाठ, सचिव विष्णु अग्रवाल, कार्यकारिणी सदस्य ज्योति कुमार लाठ, गोपाल अग्रवाल, दिलीप अग्रवाल, सुभाष बिंदल, धीरज खंडेलवाल, दीपक अग्रवाल, राजेश अग्रवाल, सुशील बिंदल, अतुल अग्रवाल, सुभाष अग्रवाल, संजय खंडेलवाल समेत सभी सदस्यों ने सहयोग किया। अग्रवाल महिला समिति एवं मारवाड़ी महला समिति की सदस्याओं ने भी आयोजन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

प्रांतीय समाचार : कर्नाटक

बैंगलोर में मारवाड़ी सम्मेलन महिला परिधि, (बैंगलोर कर्नाटक) द्वारा होली का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्ष माया अग्रवाल के नेतृत्व में हुआ, जिसमें सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सभी महिलाओं ने राधा-कृष्ण थीम पर एक खूबसूरत रील बनाकर माहौल को जीवंत बना दिया।

इस कार्यक्रम में सलाहकार मंजू अग्रवाल, सचिव शालिनी अग्रवाल, उपाध्यक्ष लता चौधरी, और सदस्य पल्लवी, वीनिता, मधु, आशा, हेमलता, जया, पिंकी, पूजा, और पारुल ने भी सक्रिय भागीदारी की।

कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. सुभाष अग्रवाल भी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

प्रांतीय समाचार : बिहार

श्री संजय सरावगी मंत्री नियुक्त

पांच बार के विधायक समाज के गौरव श्री संजय सरावगी जी को बिहार सरकार में मंत्री पद ग्रहण करने के लिए उनसे मिलकर बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से पुष्प गुच्छ एवं शाल प्रदान कर बधाई एवं शुभकामनाएँ दी।

प्रांतीय समाचार : छत्तीसगढ़

होली मिलन कार्यक्रम

१६ मार्च २०२५ रविवार सुबह १०.०० बजे अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के छत्तीसगढ़ प्रांतीय प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, रायपुर की ओर से होली मिलन का कार्यक्रम प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के सचिव अमर बंसल जी के निवास कार्यालय खाटू श्याम मंदिर के पास समता कॉलोनी में किया गया। छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पुरुषोत्तम सिंघानिया जी के अध्यक्षता में होली मिलन के साथ-साथ समाज का एक बैठक भी किया गया, जिसमें आगे होने वाले छत्तीसगढ़ प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय बैठक के बारे में चर्चा हुई, बैठक का प्रारंभ भारत माता के चित्र पर रायपुर महानगर के संघ चालक श्री महेश बिड़ला जी द्वारा मल्यार्पण के उपरांत किया गया। उत्कल कार्यक्रम का संचालन प्रादेशिक सचिव अमर बंसल जी ने किया, प्रादेशिक अध्यक्ष पुरुषोत्तम सिंघानिया जी, रायपुर शाखा अध्यक्ष संजय शर्मा जी, छत्तीसगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स के पूर्व महामंत्री देवेंद्र अग्रवाल जी, रायपुर महानगर के संचालक महेश बिड़ला जी, रायपुर शाखा के सचिव प्रवीण सिंघानिया जी आदि ने अपना अपना उद्‌बोधन के साथ-साथ सभी को होली की शुभकामनाएँ दीं, कार्यक्रम में मौजूद सभी माननीय सदस्य अजय तायल जी, संतोष तिवारी जी, गोपाल बजाज जी, पवन अग्रवाल जी, हेमचंद जैन जी, रतन चंद जैन जी, अशोक जैन जी, लक्ष्मीनारायण चांडक जी, कमल किशोर लाहोटी जी, के सी माहेश्वरी जी, संजय संघी जी, रूपकुमार मोहनिया जी, नवीन भूषणिया जी, सुरेश जिंदल जी, खजांची अग्रवाल जी, अशोक अग्रवाल जी, राकेश शर्मा जी, विवेक अग्रवाल जी, नरेश सिंघानिया जी, गोविंद अग्रवाल जी, रवि सिंघानिया जी, प्रह्लाद चौबे जी, प्रमुख ने एक एक कर सभी को होली की बधाइयां दी, अंत में होली की ताल में गी के साथ सभी ने नृत्य कर होली का मजा लेते हुए दोपहर भोजन पकवान के साथ होली मिलन के कार्यक्रम को समापन किया।

प्रांतीय समाचार : दिल्ली

प्रांतीय कार्यकारिणी सभा संपन्न

दिल्ली प्रदेश मारवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय कार्यकारिणी की सभा दिनांकः ९ मार्च २०२५ को लाइब्रेरी हॉल, "राजस्थली अपाट मेंट्स" पीतमपुरा, दिल्ली में आयोजित की गई जिसमें बड़ी संख्या में कार्यकारिणी सदस्य एवं समाज बंधु उपस्थित रहे।

सभा की अध्यक्षता श्री लक्ष्मीपत भुतोड़िया, प्रांतीय अध्यक्ष ने की। बैठक की कार्यवाही के दौरान पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष एवं चुनाव अधिकारी श्री राज कुमार मिश्रा ने विधिवत प्रांतीय अध्यक्ष के चुनाव के परिणामों की घोषणा करते हुए बताया कि केवल एक ही नामांकन पत्र प्राप्त हुआ था वो भी श्री राजेश सिंघल जी से अतः उन्हें निर्विरोध प्रांतीय अध्यक्ष पद सत्र २०२४-२०२६ के लिए चुना हुआ घोषित किया जाता है। सभी ने करतल ध्वनि से श्री राजेश सिंघल का निर्विरोध प्रांतीय अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर स्वागत किया।

पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पवन गोयनका ने श्री राजेश सिंघल को बधाई एवं शुभकामनाएँ पुष्प गुच्छ से स्वागत किया एवं आशा व्यक्त की कि श्री राजेश जी के नेतृत्व सम्मेलन नई ऊंचाइयां को हासिल करेगा। उन्होंने प्रांतीय अध्यक्ष श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया के कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि भूतोड़िया जी का कार्यकाल बहुत शानदार रहा एवं पूर्व अध्यक्ष के रूप में आगे उनकी जिम्मेदारी अधिक हो जाएगी क्योंकि उनको समाज सेवा के साथ-साथ अपने अनुभव से नवनिर्वाचित अध्यक्ष का मार्ग दर्शन भी करना है। श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया ने श्री राजेश सिंघल को दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया एवं भरोसा दिलाया कि समाज के हित के लिए वो हमेशा भाई राजेश जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते रहेंगे।

बैठक में मुख्य उपस्थिति श्री पवन गोयनका (पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) के अलावा प्रांतीय एवं शाखाओं के पदाधिकारीगण, श्री राज कुमार मिश्रा (पूर्व प्रांतीय अध्यक्ष), श्री सुन्दर लाल शर्मा (प्रांतीय महामंत्री), उपाध्यक्षगण श्री मन्ना लाल बैद, श्री सज्जन शर्मा, श्री दीपक अग्रवाल (कोषाध्यक्ष), शाखा अध्यक्षगण श्री रमेश बजाज (गणगौर), श्री पवन शर्मा (मध्य दिल्ली), श्री सुभाष जैन (द्वारका शाखा) श्री संजय अग्रवाल (पूर्वी दिल्ली), श्री संजीव केडिया (गणगैर महामंत्री), श्री नरेंद्र डागा (नव निर्वाचित अध्यक्ष गणगौर, श्री पवन कुमार पोद्दार (पूर्व अध्यक्ष गणगौर) एवं श्री प्रकाश मंत्री, श्री आनंद कुमार, गौरव केडिया, श्री मुकेश खंडेलवाल, श्री पवन डालमिया, श्री राजेश सोनी (उत्तरी दिल्ली प्रभारी), श्री छज्जन लाल गुप्ता, श्री मोहित अग्रवाल, श्री आर. के. जायसवाल (संपादक - जनमत की पुकार) उपस्थित रहे। सभा उपस्थित सदस्य ने श्री राजेश सिंघल जी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी, श्री राजेश सिंघल जी ने चुनाव अधिकारी श्री राजकुमार मिश्रा जी एवं सभी का धन्यवाद दिया एवं भरोसा दिलाया कि वो तन-मन-धन से समर्पित भाव से, प्रांतीय अध्यक्ष श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया, पूर्व पदाधिकारीगण एवं वरिष्ठजनों से मार्गदर्शन समाज सेवा का कार्य करते हुए सम्मेलन को नई ऊंचाईयां देने का प्रयास करेंगे।

संक्षिप्त परिचय

दिल्ली प्रांत के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री राजेश सिंघल

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की प्रांतीय शाखा दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष श्री राजेश सिंघल का जन्म १७ जुलाई १९७१ को दिल्ली में हुआ। आपके पिता का नाम स्व. द्वारका प्रसाद है। आपने अपनी १२वीं तक की शिक्षा पूरी कर व्यवसाय से जुड़ गए। आपने श्रीमती मीनु देवी को अपना जीवन साथी बनाया। आप सम्मेलन से २०२४ से जुड़े। आपश्री न केवल समाजसेवा बल्कि व्यापारिक समुदाय के विकास में भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। विट ट्रेडर्स डेवलपमेंट एसोसिएशन के महामंत्री के पदभार को सुशोभित करते हुए व्यापारियों के हितों की रक्षा एवं उनके आर्थिक सशक्तिकरण के लिए सतत प्रयास कर रहे हैं। राजनीति में आपकी सक्रियता है, आपश्री राष्ट्रीय स्तर की पार्टी भारतीय जनता पार्टी में शक्ति केंद्र प्रमुख (कौहाट मंडल, दिल्ली) के रूप में सक्रिय हैं। आप संगठन के विस्तार एवं जनसंपर्क को सशक्त करने के लिए कार्यरत हैं।

आपश्री ने अपना योगदान केवल सम्मेलन एवं राजनीति में ही नहीं अपितु शैक्षिक, धार्मिक, सामाजिक एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में निम्नलिखित प्रतिष्ठित संस्थाओं में संरक्षक, ट्रस्टी एवं पदाधिकारी के रूप में जुड़े हुए हैं। श्री अग्रसेन इंटरनेशनल अस्पताल (रोहिणी), महारा अग्रसेन अस्पताल (पंजाबी बाग), समर्पण हार्ट और कैंसर अस्पताल (केशवपुरम, दिल्ली), मौजीराम लायंस आई सेंटर, (बख्तावरपुर), आदर्श अग्रवाल धर्मशाला ट्रस्ट (आदर्शनगर, दिल्ली) एवं अन्य कई संस्थाओं में अपनी सेवा दे रहे हैं।

आपका उद्देश्य मारवाड़ी समाज को राष्ट्रीय स्तर पर एकजुट करना नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति और विरासत से जोड़ना तथा समाज के आर्थिक, शैक्षिक और सामाजिक विकास में योगदान देना है। सम्मेलन परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

मारवाड़ी सम्मेलन के एक प्रतिनिधि मण्डल ने दिनांक १५ मार्च २०२५ को सिफ्टि बैंक्वेट, अमृतसर में मारवाड़ी समाज, अमृतसर द्वारा आयोजित होली मिलन में सहभागिता की।

प्रतिनिधि मण्डल में श्री पवन गोयनका, (पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष), श्री लक्ष्मीपत भूतोड़िया (प्रां. अध्यक्ष, दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन) एवं श्री रमेश बजाज (गणगौर शाखाध्यक्ष) थे।

कार्यक्रम के दौरान समाज के विभिन्न बन्धुओं से मुलाकात एवं विचार विमर्श हुआ सभी का एक मत से विचार था कि अतिशीघ्र पंजाब में शाखाओं एवं प्रांतीय इकाई का गठन होना चाहिए। इसके लिये निकट भविष्य में जल्द ही एक मीटिंग का आयोजन किया जायेगा।

प्रांत एवं शाखा गठन हेतु सभी की सहमति से श्री सुनील जी गुप्ता को प्रभारी एवं संयोजक बनाया गया।

सम्मेलन प्रतिनिधि मण्डल ने सभी को होली की शुभकामनायें एवं आयोजकों, श्री वशिष्ठ जी गोयनका, श्री विजय गोयनका, श्री रजनीश गोयनका, श्री आनंद गोयनका, श्री मनोज अग्रवाल, श्री अरुण सिंघानिया, श्री विक्रम गोयल, श्री मनीष अग्रवाल, श्री सुमित सिंगानिया एवं विशेष रूप से श्री सुनील गुप्ता जी को आमंत्रण एवं सम्मान हेतु आभार व्यक्त किया एवं धन्यवाद दिया।

नई पीढ़ी में संस्कार और संस्कृति की चेतना कैसे विकसित करें?

बच्चों को संस्कार और अच्छे गुण सिखाने की आवश्यकता
हर माता-पिता के लिए उनके बच्चे सबसे प्रिय होते हैं। बच्चों की परवरिश में उन्हें अच्छे संस्कार देना सबसे महत्वपूर्ण हैं। आज के समय में, जब बच्चों को भटकाने वाले कई माध्यम हैं, हमें उन्हें सही दिशा दिखाने की जरूरत हैं। यदि माता-पिता सिर्फ संपत्ति जुटाने में व्यस्त रहते हैं और बच्चों को अच्छे, संस्कार नहीं देते, तो भविष्य में वे माता-पिता की कद्र करना नहीं सीख पाते। इसलिए बचपन से ही उन्हें माता-पिता की सेवा और सम्मान करना सिखाना चाहिए।

बचपन से संस्कार देने की आवश्यकता
बच्चे कोमल पौधों की तरह होते हैं। उनकी परवरिश का सही समय बचपन ही होता हैं। बच्चे जो देखते हैं, वही सीखते हैं। गीता में कहा गया है, "यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।" अर्थात, श्रेष्ठ व्यक्ति जैसा आचरण करते हैं, अन्य लोग भी वैसा ही करते हैं। इसलिए माता-पिता को स्वयं अच्छे संस्कार अपनाने चाहिए।

बच्चों में अच्छे गुण विकसित करने के सरल उपाय

१. समय की पाबंदी सिखाना
बच्चों को समय पर सोने, उठने, और पढ़ाई करने की आदत डाले। समय के महत्व को समझाने के लिए प्रेरक कहानियां सुनाए।

२. दूसरों का सम्मान करना
बड़ों का आदर करना सिखाएं। अतिथियों को प्रणाम करने की आदत डालें और "धन्यवाद," "कृपया," "क्षमा करें" जैसे शब्दों का प्रयोग सिखाएं।

३. आत्मनिर्भरता विकसित करना
बच्चों को छोटे-छोटे काम खुद करने दें, जैसे कपड़े पहनना, बैग पैक करना और अपने सामान की देखभाल करना।

४. पर्यावरण के प्रति जागरूकता
बच्चों को पौधे लगाना, पानी बचाना और स्वच्छता का महत्व समझाएं।

५. ईमानदारी और सत्यनिष्ठा
बच्चों को सच बोलने की आदत डालें। गलती होने पर उन्हें प्यार से समझाएं और दंड देने से बचें।

६. दान और परोपकार
बच्चों को जरूरतमंदों की मदद करना सिखाएं, जैसे पुराने कपड़े, खिलौने, और किताबें दान करना।

७. स्वच्छता की आदत
रोज नहाने, दांत साफ करने, और हाथ धोने की आदत डालें। स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाएं।

८. धैर्य और सहनशीलता
हर चीज तुरंत नहीं मिलती, यह सिखाएं। बोर्ड गेम्स खेलकर धैर्य बढ़ाएं।

सम्मेलन मंच मार्च, २०२५ के पुरस्कारों की घोषणा

'नई पीढ़ी में संस्कार और संस्कृति की चेतना कैसे विकसित करें?' विषय पर प्राप्त विचारों में निम्नलिखित छः प्रतिभागियों को पुरस्कृत किए जाता हैं।

१. श्री राजेंद्र हरलालका (बंगाईगाँव)
१. डॉ. महेश जैन (डिब्रूगढ़)
२. श्री अशोक अग्रवाल (सिलीगुड़ी)
२. श्री ओमप्रकाश पचार (बंदरदेवा)
३. श्रीमती स्मिता धीरासरिया (असम)
३. श्री मुकेश मित्तल (पूर्वी सिंहभूम)

इनके अतिरिक्त श्री राज कुमार सराफ, श्री विनोद कुमार लोहिया, श्री संतोष छाजेड़, श्रीमती मंजुला जैन, श्री ओम प्रकाश अग्रवाल, श्री विकास कुमार अग्रवाल, श्री सुनील कुमार अग्रवाल, श्री दीपक शारडा, श्रीमती सोनम अग्रवाल, श्री मोहित मित्तल, श्रीमती राखी अग्रवाल, श्री सांवरमल शर्मा एवं श्री रंजीत अग्रवाल, के विचार भी प्रशंसनीय हैं।

– प्रियंकर पालीवाल
अध्येता, निर्णायक मंडल

९. सकारात्मक दृष्टिकोण
असफलता को सीखने का एक हिस्सा मानें और हर स्थिति में सकारात्मक रहना सिखाएं।

१०. पढ़ने-लिखने की आदत
रोज एक कहानी पढ़ने या सुनाने की आदत डालें और उनकी रुचि के अनुसार किताबें दिलवाएं।

११. निर्णय लेने की क्षमता
छोटे-छोटे निर्णय लेने के लिए प्रेरित करें और अपने फैसलों की जिम्मेदारी लेना सिखाएं।

१२. कला और रचनात्मकता
ड्राइंग, पेंटिंग, और क्राफ्ट जैसी गतिविधियों में भाग लेने दें ताकि कल्पनाशक्ति बढ़े।

१३. स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता
संतुलित आहार, योग, और नियमित व्यायाम का महत्व समझाएं।

१४. टीम वर्क और सहयोग
मिलजुल कर काम करने और दूसरों की मदद करने की आदत डालें।

१५. बुजुर्गों का सम्मान
दादा-दादी के साथ समय बिताने को प्रेरित करें ताकि वे पारिवारिक मूल्यों को समझें।

बच्चों को अच्छे संस्कार और आदतें सिखाना माता-पिता की सबसे बड़ी जिम्मेदारी हैं। यदि बचपन से ही ये गुण विकसित किए जाएं, तो वे अच्छे इंसान और जिम्मेदार नागरिक बनेंगे। बच्चों को समय दें, उनके साथ मित्रवत व्यवहार करें, और सही दिशा दिखाएं। यही हमारे समाज और भविष्य की सबसे बड़ी पूंजी हैं।

– राजेंद्र हरलालका
बंगाईगांव, असम (संयुक्त प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत)

नई पीढ़ी में संस्कार और संस्कृति की चेतना कैसे विकसित करें?

आज हम यह देखते है कि नई पीढ़ी में हमारे संस्कार, संस्कृति के विषय में जानकारी एवं पालन का अभाव हो रहा हैं। मेरे विचार में इसके कई कारण हो सकते हैं। कुछ मूल कारण हैं :

१. छोटे परिवार :
आज कल संयुक्त परिवार कम ही देखने को मिलते हैं। बच्चों का बचपन छोटे से घर में ही गुजर जाता हैं। ना कोई सामाजिक कार्यो की चर्चा, ना सामाजिक आयोजनों में आना जाना, लोगों से मिलना जुलना, सामाजिक स्तर के आयोजनों में जुड़ना आदि। घर में बड़े बुजुर्गों की कमी भी एक कारण हैं। छोटे परिवार में लोगों में समय किसी के पास नहीं होता एक दूसरे के लिए। संस्कार, संस्कृति को जानने समझने का वक्त जैसे किसी के पास रहा ही नहीं।

२. बच्चों पर पढ़ाई का बोझ :
आज बच्चों में पढ़ाई का बोझ अधिक होता हैं। हमने बचपन में कई तरह के खेल खेलते थे। बचपन में हमारी अपनी खेल कूद की टोलियां होती थी। दोस्तों के घर जाते थे। सभी दोस्तों के घरेलू तथा सामाजिक आयोजनों में भाग लेते थे। इन्हें नजदीक से जानते थे। इनमें रुचि लेते हुए सभी आयोजनों में शामिल होते थे। पर आज बच्चों का वह बचपन कहीं नहीं दिखता। बच्चें अपने पारिवारिक तथा सामाजिक संस्कार, संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं।

३. परिवारों में बुजुर्गों के लिए समय नहीं होना :
आज के परिवार संयुक्त ना होकर छोटे-छोटे होने की वजह से परिवार के सदस्य अत्यधिक व्यस्त रहने लगे हैं। किसी के पास बुजुर्गों के लिए समय नहीं होता हैं। अवसर देखा जाता है जिन परिवारों में बेटों की संख्या दो से अधिक हो उनमें बुजुर्ग माता पिता इन बेटों में बटकर रह जाते हैं। आज इस बेटे के घर तो कल उस बेटे के। ऐसे में परिवार के नन्हे-नन्हे बच्चों में कैसे संस्कार आयेंगे?

४. बच्चों में मोबाइल के प्रति क्रेज :
आज बच्चों में मोबाइल के प्रति क्रेज बढ़ता ही जा रहा हैं। दोस्तों के साथ चैटिंग करना, वीडियो गेम खेलना, वेस्टर्न मूवी देखना, गाने सुनना, नाचना, गाना वेस्टर्न पहनावा, अंग्रेजी में बोल चाल करना पसंद हैं। माता पिता भी आज के मुताबिक मॉडर्न हो रहे है, ऐसा मानकर उनकी इन आदतों को अनदेखा कर देते हैं। अनजाने में ही सही ये बच्चे अपने संस्कार, संस्कृति से दूर होते चले जा रहे हैं।

५. परिवारों में हिंदी में बोलचाल का चलन :
हमारी मायड़ भाषा 'मारवाड़ी' है। पर ज्यादातर माता पिता अपने बच्चों से हिंदी में वार्तालाप करते हैं। अगर हम अपने बच्चों से अगर मारवाड़ी में बात नहीं करेंगे तो ये बच्चे बड़े होकर उनके बच्चों से क्या मारवाड़ी में बात करेंगे? कभी नहीं। इस तरह वे हमारी मारवाड़ी संस्कृति, बोलचाल, रीति रिवाज को कैसे जुड़ पाएंगे?

६. मारवाड़ी संस्कार, संस्कृति, रीति रिवाज आदि से जुड़ी मूवी, नाटक, मेले के आयोजन में कमी :
मारवाड़ी संस्कार, संस्कृति, रीति रिवाज, आदि से जुड़ी मूवी, नृत्य नाटिका, मेले का आयोजन आदि की कमी भी बच्चों में हमारे संस्कार, संस्कृति की कमी के अन्य कुछ कारण हो सकते है।

७. अन्य कारण :
बच्चों को पढ़ने के लिए बाहर भेजना, माता पिता के लिए बच्चों के लिए समय की कमी, बातचीत की कमी, सामाजिक आयोजनों में साथ नहीं ले जाना भी ऐसे कई कारण हो सकते है जिसके चलते बच्चे हमारी संस्कृति, संस्कार से दूर होते जा रहे हैं।
अब सवाल यह उठता है कि हम किस तरह से बच्चों में शैशव काल से ही हमारी संस्कार, संस्कृति की चेतना को जागृत कर सकते है? यह एक ऐसा जरूरी सवाल है जिस पर हमें चिंतन मनन करने की जरूरत हैं।

मेरी नजर में हमें इन तरीकों को अपनाना होगा :

१. माता पिता बच्चों के लिए समय निकाले :
हर माता पिता को अपने बच्चों के लिए समय निकाल कर उनसे बातचित करें। उन्हें अकेला ना छोड़े। उन्हें हमारी सभ्यता संस्कृति से अवगत कराएं। मंदिर जाएं तो साथ ले जाएं। परिवार के लोगों से परिचय करवाएं। अच्छे कार्यों के लिए प्रेरणा दे। बच्चों को बिना समय दिए ये कार्य संभव नहीं हो सकते।

२. घर में मारवाड़ी में बोलचाल करें :
मायड़ भाषा हमारी संस्कृति की पहचान है। इसे हर हालत में जीवित रखना होगा। हमें अपने घरों में मारवाड़ी भाषा में बोलचाल करनी चाहिए। अपने बच्चों से भी मारवाड़ी में बातचीत करना शुरू कर दे। इस तरह हम उन्हें अपनी सभ्यता संस्कृति के जड़ों से जोड़ कर रख पाएंगे। बच्चे भी धीरे धीरे इसे समझ पाएंगे।

३. परिवारों का विस्तार करें :
आज हम देखते है कि हमारे हर एक छोटे परिवार में एक अथवा दो ही बच्चे होते हैं। बच्चों में पढ़ाई का बोझ अत्याधिक होने की वजह से वे आपसे खेलने कूदने का वक्त ही नहीं नकाल पाते। परिवारों का विस्तार होने से बच्चों में खेल कूद का माहौल बनेगा। घरों में रौनक बढ़ेगी।

४. मारवाड़ी भाषा की पुस्तके पढ़ने हेतु प्रेरित करें :
हमें अपने बच्चों को मारवाड़ी भाषा की पुस्तके पढ़ने हेतु प्रेरित करना होगा। मारवाड़ी नाटक, फिल्म, लघु कथा, नृत्य, मारवाड़ी भाषा में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बच्चों को ले जाना होगा। इस तरह उनमें हमारे संस्कार संस्कृति को जानने की रुचि बढ़ेगी।

५. मायड़ भाषा सिखाने हेतु विशेष कक्षाओं का आयोजन करना :
जो लोग मारवाड़ी बोलना नहीं जानते, उनके लिए हमारी सामाजिक संस्थाओं द्वारा वर्क शॉप आदि का आयोजन किया जाना चाहिए। इससे यह होगा कि लोग एक दूसरे से अपनी मायड़ भाषा में वार्तालाप कर पाएंगे तथा हमारी संस्कृति को अच्छी तरह समझ पाएंगे।

६. मारवाड़ी संस्कार, संस्कृति, रीति रिवाज आदि से जुड़ी मूवी, नाटक, मेले का आयोजन :
मारवाड़ी संस्कार, संस्कृति, रीति रिवाज, आदि से जुड़ी मूवी, नृत्य नाटिका, मेले का आयोजन आदि की कमी भी बच्चों में हमारे संस्कार, संस्कृति की कमी के अन्य कुछ कारण हो सकते हैं।

– डॉ. महेश कुमार जैन
डिब्रूगढ़, असम (संयुक्त प्रथम पुरस्कार से पुरस्कृत)

RUPA®
FRONTLINE
YEH STYLE KA
MAMLA HAI!
Toll-free No.: 1800 1235 001 | www.rupaonlinestore.com |
We are also available at: amazon | Flipkart | JioMart
SCAN & EXPLORE

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2024-2026
Date of Publication - 27th March, 2025
RNI Regd. No. 2866/1968

From :
All India Marwari Federation
4B, Duckback House
41, Shakespeare Sarani, Kolkata-17
Phone : (033) 4004 4089
E-mail : aimf1935@gmail.com